





श्रीगोपीजनवदनभाय॥ अथ श्रीसुन्दर  
 ज्ञेयप्रणामस्तोत्रिका भाषा श्रीहरिराय  
 जीकृतलिख्यते मूलग्रंथश्रीगुरुदेवजीक  
 तहाप्रथमश्रीहरिरायजीश्रीआचार्यजीमहाराज  
 नकोनर्पणिएसाईजसोवीरतीकरतहे जो  
 नोकोप्रेमास्तकाटीकाकरिवेमोयोग्यतादेह  
 सोकाहेतेजोप्रेमास्तजोग्रंथ श्रीआचार्यजीम  
 हाप्रभुनकीकृपाते श्रीगुरुसाईजीआपवर्णनकी  
 येहें तामेश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकोश्रीप्रभो  
 तमपूर्णधर्मसहित जेसेश्रीकृष्णहेंतादीस्व  
 पकरिकेवर्णनकीयेहें एसेश्रीआचार्यजीमा  
 मेंवारवागारनमस्कारकरतहौं सोमगलाचर  
 एएकश्लोककरिकेंकहतहों श्रीकृष्णमोआचार्य  
 लीलाधिप्रेमसिंधुमहाधरआपानोपायसर्व  
 कृतश्रीविद्वलेनमोःस्तुते॥ १॥ याको श्रीशिवश्री  
 आचार्यजीमहाआपकेसेहैं जितनीश्रीगुरु  
 जीकालीलाहें सोपरमग्रंथीरहैरससमुद्रवतहैं  
 सोश्रीआचार्यजीमाकेहृदयविखेस्थापनहै सो  
 अमृतरूपीलीलारसहै तिनकोपानकर्ताश्रीगुरु

जी आप हैं चाते नितनी श्री गुरुजी की ला  
हो सब श्री आचार्यजी महाप्रभु आप अनुभव  
अपने हृदय में रखते हैं ऐसे श्री आचार्य  
महाप्रभु को बार बार नमस्कार करते हैं  
न के पुत्र श्री विद्वलनाथजी से श्री आचार्य महा  
प्रभु के हृदय में जोर सहै तिन के पान क  
ई जी आप हैं तिन के मैं बार  
स्कार करते हैं जो मो ऊपर प्रसन्न होयें  
मो जो मोर्थ है जो प्रेमा मृतक की का करिवे  
मो योग्यता मो को देहु आप कर मैं गला चरण के  
रि के विनती की श्री अव प्रेमा मृतक को प्रथम श्लोक  
कहते हैं श्लोक सुरत कुक्ष प्रेमा मृत र स भरे एण  
ति भरिता विहारा कुर्वाण व्रज पति विहाराधि  
पुसदा ॥ प्रिया गापी भर्तुः सुरत सततं वलभ  
इति प्रथा वत्स स्मा कं हृदि सुभग मूर्तिस करु  
णा गशा या को अर्थी ॥ सुव श्री पूर्ण पुरुषोत्तम जे  
श्री कृष्ण तिन के जे धर्म है ते से श्री आचार्यजी म  
के धर्म है सब सो कहते हैं जो जै से श्री कृष्ण जो

तिनकेहृदमें श्री अंग अंग में प्रेम न स्थो है मे  
म परम मिष्ट है जैसे अमृत परम मिष्ट है सो  
गमें ऐसी रस न स्थो है जो समा तना ही है तब  
श्री गुरुजी आप मनमें विचार काये जो यह रस  
कोन को दान करों या रस को पात्र तो प्रिय भक्त  
हैं तिनको करों या प्रकार प्रिय के पुति जो श्री गुरु  
जी सो विचार काये ता पिछे के र विचार के  
के जो कोन प्रकार दान करों कोन द्वारा दान करे सो  
कहते हैं जब एकोत्त समय काल से वेध होय तब  
वैशेषी रस दान का यो जाइ ता तें ऐसी श्री गुरु  
जी आप अपने हृदये में विचार करिके शरद का  
व को सच है परम रस रूप है जानिके आप वंद्य  
वन में रात्रि के समय वासुरी वजाइ सो ऐसी  
श्री गुरुजी आप वासुरी वजाइ जो आपने ज  
पने घर में प्रिय बंधू रहि तिनके कर्ण में श  
ब्द सो सो विरह करिके व्याकुल भई सो को  
ई जा पीछे नेत्र एक ही में अंजन अंज है और  
वासुरी की शब्द सुनत ही उठि चली कोऊ अप  
ने पतिके जिमावत हैं सो वासुरी को शब्द सु  
नहि ही उठि चली यां यों जा प्रकार जो प्रिय

अपने घर कार्य करत दुत्ती सो सब को  
लूक हं पदुरे वस्त्र हं फ हं क हं पदुरे  
हेते जो श्री कृष्ण को जो प्रेम र सहै सो वा सु  
आय के विज भक्तन के अव ए दार हय  
य नीतर प्रवेश भयो है ताते शरीर की क छू  
धि नां रह ही है सो वे ए के जो स्वर है ता हो दे  
र सब चली तव योग माया जो है सो  
प्रभु जी का दर्श है सो मन में विचार खोजे श्री  
सन्मुख विज भक्त चली है सो कछु मोहु  
न का शेष कर चाहिये सो काहेते जो भग  
वद य का शेष आव सक है ताते योग माया वि  
ज भक्तन के आभरण वस्त्र सब उलट रहै हुते सो  
सब सपे वना य दीये और कोई एक गोपी जनन  
करा खे हुती तव तिन न ने श्री कृष्ण  
का ध्यान करि के विरह करि के अपने शरीर को  
त्याग काये सो सब ते पदिले श्री गुरु जी को आ  
य के प्राप्त भई जो पापकार गोपी जन को बुलाय  
के अपने श्री अंग में जोर सहै तो तिन को दान  
ज भक्तन को दयो है ते से ही श्री आचार्य जी  
ह प्रभु आप परम कृपा करि के देवी जीवत के  
द्वार राय प्रकट होय के पृथ्वी परिक्रमा की

तवजीवनकोसंसारमेंमोहितदेखे तापीछे  
गोकुलश्रीआचार्यमहप्रभुआपपाधे तवजीव  
नकाकृद्धारकोविचारमनमेंकरतंहुते ताही  
समयश्रीपूर्णपुरुषोत्तमप्रगटहोयके ब्रह्मसंबंध  
काआज्ञादीये जोजाजीवकोतुमब्रह्मसंबंधकरा  
वगे तिनकेसवदाषडूरहोयगे तिनकोमेंअंगी  
कारकरूंगे तवश्रीआचार्यजीमहप्रभुआपके  
सहे जैसेश्रीपूर्णपुरुषोत्तमकेअंगअंगमें  
रसभसोहुतो सोविजभक्तनकेहृदमेंवेएनाद  
द्वारादानकाये तैसेहीश्रीआचार्यजीमहप्रभु  
केअंगअंगमेंश्रीठाकुरजीकीलीलारूपजो  
कोडूरसहै सोदेवीजीवनकोदानकरतहै सोज  
प्रकारश्रीठाकुरजीआपवेएद्वाराव्रजभक्तनको  
रसदानकरतहै तैसेहीश्रीआचार्यजीआपनोम  
समर्पणद्वारा अपनेशेवकनकोरसकोदानकी  
योहै औरश्रीठाकुरजीरसकोदानकरिकेंविज  
भक्तनको तापीछेऊनकेसंगरमणकाये ना  
नाप्रकारकीबिहुरलीलाकाये तैसेहीश्रीआ  
चार्यजीआपअपनेदेवीजीवनकोनामसमर्प  
णद्वारा रसकोदानकरिकें ताणसेअपनेशेव  
कनकेसंगनानाप्रकारकीलीलाकरतहै

रत्न कृपा निज देवी जीव पर श्री मुख वचन सु ।  
बहुत पुनि गुगल गीत की रसवरषा वरखा  
२ या प्रकार अपने सिकन को संग कथा रूपी जो  
मत्त तिन की वरखा करत है और ज्ञा जीव को व  
संवेध करत है तिन को भगवत् सेवा पध  
रावत है जो संपन्न होय तिन के घर स्वरूप सेवा  
पध रावत है और जिन सों शोना हो सध सक  
त है तिन सों श्री गोवर्द्धन नाथ जी को सेवा कर  
वत है और जिन के घर स्वरूप सेवा तथा वस्त्र  
शोभा पध रावत है सो जहां श्री आचार्य जी आपस  
वस्तु को भोग करत है सो कहते हैं जो श्री वदन  
भाष्टक में श्री गुसाई जी आप श्री आचार्य जी मह  
प्रभुन को स्वरूप वर्णन काये है ताते जो सामग्र  
वैश्वकर्षिकें श्री ठाकुर जी को सम पूर्ण करत है  
सो श्री ठाकुर जी आप श्री मुखारविंद द्वारा भोग  
कर करत है सो मुखारविंद रूप तो श्री आचार्य  
मह प्रभु आप है ताते यह भोग को श्री आचार्य  
मह प्रभु आप भोगी कर करत है ताही ते ज  
स्मव सामि श्री करिकें श्री प्रभु जी के आगे धरि  
प्रकार सो विनती करत है जो महाराजा  
श्री आचार्य जी मह प्रभुन की कानि ते भोगी का



तब श्री गुरुजी आप श्री आचार्यजी के कांति में  
जीकार करि सामिग्री अंगत हैं या प्रकार श्री  
आचार्यजी आप अपन सेवक न के धर सब गौर  
विहार करत हैं और श्री गुरुजी जव दंडावन में  
बैठे नाद करत हैं तब विजमै जे जीव हैं पशु प  
क्षी जिनमें जैसा अधिकार है तिनको ता हा भां  
ति सो रस का वरखा करत हैं अनुभव करावत  
हैं सो काहे ते जो जा समय श्री गुरुजी आप के  
एलाद करत हैं ते श्री गुरुजी चरण चिह्नि ता  
दास समय के हैं और वे एक धुनि सुनिके श्री यमुना  
जी को प्रवाह उलटो चलत हैं और चंद्र जो है सूर्य  
जो है तिनके रथ नाड़ी चल सकत हैं और मुनी  
न के ध्यान वांसुरी को शब्द सुनिके छूटत हैं गाय  
प्रेम में विवस होय के श्री गुरुजी के सनमुख दे  
खत हैं ते त्रिनना हारवात हैं और गायन के व  
करा सो रुद्ध धना हु पावत हैं और जितने पैछी  
हैं सो मोन होय के वांसुरी को शब्द सुनत हैं सो  
नो चिन्त के सेलित हैं और विमान ऊपर देवा ग  
ना पति सहित हैं मोहित होय रहत हैं मग जो  
है सो अपनी चौकड़ी को भूलि जात हैं और विज  
भक्त तो घर में रहि नाद सकत हैं ऐसी वांसुर

जब श्रीगुरुजी व जावत है तब जाको जैसा अधिकार है तिनको तेसे रस को दान होत है तेसे श्रीआचार्यजी महप्रभु आपसम मर्पण को दान जै जीव शरण आवत है तिनको तेन्काल होत है ब्राह्मण तन्निवेश्य कृष्ण स्त्री सवन को दान करत है सो जिनके हृदय में जै सो भाव है जै जै सो अधिकार के जीव है तिनको तितनो लीला को दान करत है सो कहते जो बड़ा पाव है तिनमें बड़तर रस समात है ताते जो प्रकार के पाव है तिनमें ते सौई रस दान करत है तहो अपन प्रतिविब को पकरि वैके लाय में यत्न करत है सो जव प्रतिविव श्रीहस्त कमल में ना हो आवत है तब विलकि के हसत है सो है दुधरात आवे है सो दामि जै सेचु मके है त्प्रकार परम शोभयमान है ऐसे जो सुदुतया लक है तिनमें मन लागे है और जा शिव को जो भाव है जाको श्रीगुरुजी में सख्य भाव का बोध ना है ताको सख्य भाव का सिद्ध होत है जै से श्रीरामाजी आदि जो सखा है तिन सौ नाना प्रकार के शक मिल के खात है नाना प्रकार खेलत है जो भी वजो विदस्वामि को सिद्ध अयो तेसे सिद्ध हो और जाको अधिकार कृष्ण रस में है ताको

ॐ हावत है तहानाना प्रकार की रसादिक लीला होत  
है ताको अनुभव होय जैसे कुंभनदस को सिद्ध भये  
आशी गोवर्द्धन नाथ जी आप विना एक तल एहं रहि  
सकत ना ही है एसा अधिकार होय ताको शृंग  
र को दान करत है जाको मुनई सुरभाव मे है सो  
श्री गुरु जी ईश्वर है कोटि कोटि ब्रह्म उके नाथ  
कते से ई है और जाको मन कछ लौकिक चेतो की  
कषरार्थ मे है ताको लौकिक इत्यादिक खान पान  
यह सिद्ध है करत है ताते श्री आचार्य जी मह प्रभु  
आप जा वैभव को जैसे अधिकार रहे ताको ताही  
प्रकार को दान करत है जैसे श्री गुरु जी आप वे  
नाद कर के वे एह दारा जाको जैसे अधिकार रखे  
ताको ताही प्रकार को रस दान करत है जैसे ही  
श्री आचार्य जी मह प्रभु आप नाम समुप ए कर के  
जा जीव को जैसे अधिकार है ताको ते सो ई अनु।  
भव करत है ताते जैसे धर्म श्री गुरु जी मे है  
ते से सब धर्म श्री आचार्य जी मह प्रभु मे है जैसे  
विजय भक्त श्री गुरु जी को देख के मोहित है  
ते से ही ईश्वर क जन ते वैभव है सो श्री आचा  
र्य जी को देख के प्रेम सो मोहित होत है और वि

अभक्त नाना प्रकार की सामिग्री भूषण वस्त्र समुप  
एकरावत है। सो श्री गुरु जी प्रेम सहित श्रुती का  
रकरत है। तिसे हाथी आचार्य जी मह प्रभु न के जो  
कछु भेट करत है। और उरुत्व के दिन विज भक्त श्रु  
न्यंग करत है। अपने श्री हस्त कमल सो। और ईहं  
वैष्णव श्री आचार्य जी मह प्रभु न के पधिराय को  
परम प्रेम सो करिके स्नान करावत है। और श्री ग  
गुरु जी को व्रज भक्त अपने घर में परम प्रेम सो प  
धरावत है। तव नाना प्रकार की सामिग्री है। सो स  
मुपण करत है। ता पीछे नाना प्रकार के भूषण वस्त्र  
पधिरावत है। ता पीछे मुठ वारि श्रुतिकरि निष्ठा  
वर करत है। सो दिन परम भाग्य सो भाग्य करिके  
मानत है। नाना प्रकार को गन करत है। तिसे ईहं  
वैष्णव स्व श्री आचार्य जी को पधरावत है। तव नाना  
प्रकार की सामिग्री सेवा आदि शेषत है। नाना प्र  
कार के आभूषण वस्त्र पधिरावत है। ता पीछे न्यो  
छावर करिके कीर्तन गाय को दत्त है। नाना प्रकार  
का फूल वकी माला पधिरावत है। ता पीछे तिलक  
करिके मुठ गाय वार के आरती करत है। ता दिन वै  
ष्णव स्व अपने जन्म सुफल करिके मानत है। पर  
म प्रेम में विवस छेत है। सो कहते जो। एक तो श्री

आचार्यजी आपस हजारी में परम सुंदर हैं और  
हैं जो श्री गुरुदेव ता थ जो प्रिय वक्तु मदि महर  
कामसे विराजत हैं। और श्री गुरुजी का वार  
प्रकार की लोला खोजी गरम विप्रैय गरम तिन  
की भी लोला जो कोई न सपने सो अंग अंग से  
रमणे मो देत हैं श्री आचार्यजी म हा प्रभु न के और  
आपस करुणा से त हैं जो वे धर्म पर के समक  
हात करि देखत हैं तिन के सक मने ये प्राये  
त हैं और श्री आचार्यजी आप परम विरक्त  
लोका देते जो एक समय श्री आचार्यजी के दे  
भंडार में कछु है या विद्या न दुती। तब भंडार में  
श्री आचार्यजी यम आचर्यक जो आज भंडार में  
छुसी धोला मोत न है तब श्री आचार्यजी ने श्री  
गुरुजी की मोने का करी दुती सो का कर दे  
ता को गदने धरि को सी धोला मोत न ये सो मने  
लाते मने पूरे न सब सिद्ध करि के श्री गुरुजी को  
जोग मम मिपे। पूरे लो मने आप घर में श्री गुरु  
जी गदिते न कह स हा प्रसाद न लीये। बह प्रसाद  
गुरुजी से लय देयो कछु यमुनाजी में पथ रयरी  
या लाया लो मथा स मने व भव मो हर दुती सो ले  
आया तब श्री आचार्यजी भंडार को छुला यक क  
हैं जो कये रा छु ड पला मो और स विद्या मि गीले ॥

आवता पाछे दुसरे दिन श्री गुरु जी सो पढ़ते त  
व श्री आचार्य जी आप भोज कायो ता पाछे श्री शका  
जी भोजन कायो पाछे सब शेष कटहल आवे धम  
वन महा प्रशान्त लीये। ऐसे विरक्त हैं। सो श्री आचा  
र्य जी आप अपने वैधमवन को शिवा करत हैं। जो या  
प्रकार सेवा मे सावधान रहियो। एसे श्री आचार्य जी  
आप श्री गुरु जी से सेवा करत हैं। सो देवी जीवन  
के ऊपर अनुग्रह करि वे के लीये। और श्री आचार्य  
जी आप तो श्री पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। सो प्रकर प्रथम  
शोक में यह सिद्धांत भयो जो जे से जे से धर्म श्री ग  
ुरु जी में है। ते से सर्व धर्म श्री आचार्य जी महा प्रभु न  
में है। ताते श्री कृष्ण ही स्वरूप ही जानिके श्री आचा  
र्य जी महा प्रभु न को भजन करो। आवदूख रोक्षो क  
कहत हैं जो १ श्लोक श्री भागवत प्रतिपद मणिवर  
भावां शुभूषिता मूर्तिः श्री वल्लभाभिधानस्तनो  
तु निजदास्यस्य सौभाग्यं ॥ शायको धीश्रवश्चोभा  
वत के सो है। भगवत् स्वरूप ही है। सो कहते हैं जो श्री  
गुरु जी आप जैसे ब्रह्मा ऽ विदेव अपने स्वरूप स्वरु  
प करिके व्यापिरहे हैं। श्री प्रभु जी बिना कोई पदा  
य है न। ताते श्री पूर्ण पुरुषोत्तम कहियु है। ते  
में ही श्री भागवत में सर्व वस्तु को वए न है। प्रथम

श्रीमत्समस्तभूतकेतवः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः  
प्रकटभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः  
सुनीसर्वसत्त्वभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः  
नये एवम् जल वायु पावक आकाश तिनके  
इसरेकरिसे कोलाये जैन वैराज तपयोग वि  
वैक धीर्य आश्रय सहन शील न दिव्य तापाछे  
गसपि शास्त्र आदिक प्रकटभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः  
आरज्यसुरन सो सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः  
असुरन कीर्ति होत है तव सकल देवता भक्ति  
के अपने अपने लोक छोड़ि के पुरवत्त कर कर रा  
मै जाय के छिपत है तव एवम् रूप रश्मी गुरु  
जी आय प्रकट होय के आसुरन के संधार करत है  
देवता न कर आ करत है या प्रकार श्री प्रभु जी को  
प्राग्वह्य होत है फेर प्रलय तीन प्रकार की है सो हो  
त है एक प्रलय सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः सत्त्वभूतः  
सो कहते हैं जो सिद्ध को करे एक प्रलय सत्त्वभूतः  
के होय के तापाछे जव मरत है तव प्रलय होत है  
एक महा प्रलय श्री प्रभु जी करत है तामें जितने  
देव लोक व्रज लोक शिव लोक ब्रह्मांड सहित स  
वको प्रलय होत है तव महा शेष जो है सो संकष  
जी सहस्र मुख तंत्र अग्नि है तको प्रकट करत है सो चौ

इहलोक भस्म होय जात है। समुद्र है सो अपनी म  
योय छोड़त है। या प्रकार पृथ्वी में कृत्य निगल  
यश्चैक भोतिसो होत है। सो सब श्री भागवत में प्र  
गट है सो जै से श्री कुरुजी के भजन ते जान होया ते  
से श्री भागवत के सुने ते या जीव को जान होई। सो कहते  
हैं जो श्री भागवत में प्रभु की अवतार की लाल है  
चौबीस अवतार को वर्णन है। और श्री भागवत में  
श्री एतौ पुरुषोत्तम जो श्री कृष्ण चंद्र सब अवतारन के  
अवतार भूत तिन की नाना प्रकार की लाल है। ताको  
वर्णन है। सो या जीव को जै सो अधिकार होय। ताको  
ते सोई अनुभव होई। सो काहेतें जो श्री भागवत सुहा  
रोष नागजी सदा कहत हैं। शौनकादिक सुनत हैं। और  
श्री भागवत विदुर में त्रेय परस्पर कहत हैं। और  
श्री भागवत ब्रह्म कहत हैं। नारदजी सुनत हैं। और  
श्री भागवत तीरसागर में श्री नारायण जी कहत हैं।  
तहां श्री लक्ष्मी सुनत हैं। सो ते श्री भागवत या पृथ्वी  
पर जीवन के ऊहारे के नौ काहेतें। सो जो भागवत भ  
गवत्स्वरूप है। ताकी टीका करिवे में श्री आचार्यजी  
महाप्रभु आप श्री एतौ पुरुषोत्तम हैं। सो काहेतें जो  
श्री भागवत है सो कीर्त म हा पर्वत है। सो काहेतें जो  
पर्वत में अनेक प्रकार उत्तरोत्तर होय। और मणि



होय तेसे श्रीभागवतरूप जो पर्वत है तामें भूत  
करत सन की कथा है सो वृत्तादिक है और श्री  
ठाकुरजी की बाललीला रासादिक लीला है सो मण  
है सो पर्वत में जो जानत है ताको मणि मिले कु  
दरा सो खोद के काटे तेसे श्रीभागवत में पुरुषो  
त्तम की लीला निरूपण है ताको श्रीआचार्य जी म  
हो प्रभु आप जानत है सो आप बुद्ध करिके श्री सु  
बोधजी जी इत्यादि ग्रंथ प्रकट करिये तामें नाना प्र  
कार के भाव वर्णन हैं किये है सो अपने शेष कनक  
दान काये हैं और श्रीभागवत में जो मण है सो ई  
श्वर भूषण श्रीआचार्य जी महो प्रभु न के श्री योगेश  
्वर विषे परम शोभा देत है और श्रीभागवत के सो  
है मानो महो गंगार कोई समुद्र है तिन में ते मेघ  
जल त्याइ के सगरी एथी को प्रोषण करत है तामें  
श्रीआचार्य जी महो प्रभु आप मेघ रूप होव के श्रीभा  
गवत में श्रीपुरुषोत्तम जो कोई अमृत ताकी चरक  
रत है अपने शेष कनक पर और श्रीभागवतरूप  
तो तारखा गरहे ताको आप सामर्थ्य है जैसे होरी  
रआगर के मंदरा चल पर्वत धरिके देवता और  
राक्षस मिलि के मथन काये है तासमय मंदरा  
चल पत्ताल को जाय वेल म्या तब श्रीठाकुरजी आ

पञ्चपरूप भक्ति में मंदराचलकोंपीठ परती  
 ये तव स्त्रीस्त्री गरको मथन भयो। तव वामें तें चौद  
 हर त्वनीक से ही। से से ही श्री भागवत है सो तीर  
 समुद्र है ताको श्री आचार्य जी आप मथन कर के  
 तामें चौदह जोर तन हतों। भगवत्तली लारूप  
 अमृतताको निकार से सोऊ हं समुद्र मथि के तें ति  
 का सो। सो सुर जो देव ता तिन को श्री ठाकुर जी ने  
 दियो। और अमृत हं देव तान को। पाव कराये। और  
 रजो जो आप हृदय कमल में राखे है। ता रुणी रास क  
 न को पाव करायाये। तें से ही ईह श्री आचार्य जी  
 मह प्रभु आप श्री भागवत रूपी समुद्र को मथि  
 के पुरुषोत्तम स्वरूप रत्न निकारो। सो अपने शेष  
 कनकों अनुभव कराये है। और कर्म ज डर है ति  
 नकों कर्म वताये है। सो कहते हैं जो कन को पुरुषोत्त  
 म की लीला को अधिकार नाही। ता तें कर्म ज डरे  
 हते तिन को सो ईदने है। जें से ईह रास सच को  
 वारुणी दने है। तें से ईह कर्म ज ड को सो ईदने है  
 और ऊँची लक्ष्मी जी को आप राखे हैं। तें से ईह  
 श्री आचार्य मह प्रभु सब अवतार की लीला को  
 डके श्री कृष्ण जो पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। तिन की लीला  
 के नाना प्रकार के भाव हैं। तिन को

[illegible]

बुद्धपुराण ईश को प्रथम मन करि कोत्सी पूर्ण पुरु  
षोत्तम की लीला रूप जो अलौकिक आभूषण है एक  
से योग रसासक विप्रयोग रसादित्यदि जो अलौ  
किक आभूषण है तिन करि कोत्सी आचार्य जी महा  
प्रभु आप परम शोभा देत हैं जानी व कोत्सी पुरु  
षोत्तम की लीला के पति श्री आचार्य जी आप हैं सो जब  
आप को दान करें तब लीला को भेद जानै नाह तो न जा  
नाता तैं वैष्णव हो जो तुम को श्री गुरु जी कालीला  
की चाहना होय तो तुम श्री आचार्य जी के चरण कम  
ल को स्मरण करो और श्री आचार्य जी आप कैसे हैं  
मूर्तिवत हैं ता को अर्थ यह जो मूर्ति कहियो स्वरू  
पात्मक होय यह जो स्वरूपात्मक किन को कहियो।  
ता को अर्थ जो सो कहत हैं जा को स्वरूप अलौकिक  
होया काह की बुद्ध में तथा मन में तथा चित्त में आवे  
नाही हो सो कहत हैं श्री आचार्य जी के स्वरूप को निरुध  
र वेद दिक नाह करि कैसे कहत हैं नेति नेति कहि  
के स्तुति करत हैं सो अमुच स्वरूप अखंड

हैं यों सदा ही एकर स रहत हैं को यि प्र हा प्र न व हो  
य को टेन बेर पृथ्वी में विस्तार होत है पर त श्री  
चार्य को स्वरूप सदा एकर स ही रहत है। स्वरि क  
ती है श्री आचार्य जी आप स्वरि को संघार कती है  
श्री आचार्य जी आप सदा एकर स हैं है। त्या ते मृत्ति वित्त  
है। श्री से श्री आचार्य जी आप बल भ हैं। बल भ कहिये  
जो सब न के आनंद दायक है। सर्व प्राणी मान के सुख  
त कती है। सो का हे ते जो परम कारुण्य है। परम दया  
त है। त्या ते बल भ कहिये त है। और प्राणी मान के प्रा  
ण वृत्ति है। सब न के पोषण कती है। और सब प्राणिमा  
न के हृदय के जानन दारे है। त्या ते बल भ ह सो नाम श्री  
आचार्य जी को है। और स्त्री जो है। शूद्र जो है। तिन प  
र परम अनुग्रह करि के ऊहा र काये हैं। सो का हे ते  
जो वेद में स्त्री को। शूद्र को अधिकार ना ही है। वेद क  
रि के ना ही है। सो ए ते कृपाल श्री आचार्य जी आप पर  
म दयाल श्री प्रभु जी आप प्र है। जो श्री से स्त्री शूद्र तिन  
को ऊपर परम अनुग्रह करि के। नाम समर्पण देव  
के इन को ऊहा र करत है। त्या ते जो कार्य का ह सो न  
हो है। सो श्री आचार्य जी मह प्रभु आप कये। चते  
बल भ कहिये त है। और श्री आचार्य जी मह प्रभु आप  
श्री गुरु जी को अर्पित करि के प्रिय है। प्राण पति है।

प्रत्यक्ष भव है। जिन विना श्री गुरु जी आपका  
ताप दुःख हि स कतना ही है। परम प्रिय हो या ता  
सों वल भव हि यत है। सो श्री गुरु जी को श्री आचा  
र्य जी आपसे प्रिय है जो एक ही हैं श्री गुरु जी  
श्री आचार्य जी धाना रहि सकतना ही है। नाते वल  
भ ए सो नाम है। और वल भ कहिये जो। जिन को  
श्री गुरु जी की लीला है सो जिन को परम वल भ  
ए सो नाम प्रिय है। नाते श्री गुरु जी का रसादि  
क जो लीला परम उत्तम ते उत्तम। ओ जो गारर  
स है। सो जिन को परम वल भ है। नाम परम प्रिय  
है। ता हर स। जिन को चित्त मन ले य लान हो पर  
हो है। ना विना एक ही हैं रहि सकतन हो है। सो का  
हे ते जो। सर्व रसन में गारर स ए है। जहां श्री गुरु  
जी और श्री सामिनी जी ना ना प्रकार की लीला करत  
हैं। सो श्री आचार्य जी को अत्यंत वल भ है। ता ते वल  
भ कहियत है। और विज विखे जो श्री गोकुल है श्री  
गोवर्द्धन है। सो जिन को परम प्रिय है। सो का हे ते जो  
श्री गुरु जी आपकी नित्य लीला होत है। श्री गोकुल में  
वाल लीला प्रगट है। रसादिक लील गोप्य है। और श्री  
गोवर्द्धन जो है। जहां निज छंदावन हो। तहां रसादिक  
लील प्रकट है। और वाल लीला गोप्य है। सो श्री गोकु

संमोहवशात्सर्वजीवस्य भोगानुभूतिरूपं सत्तियुक्तं  
सर्वीसांतरः ॥ ३॥ अथाहं सर्वं यत्तु सर्वं यत्तु सर्वं यत्तु  
महाप्रभुसैतैर्है मायावादरूपं जोसेरैति वर  
अधिकारताको निवारन कर सा है नामहरति  
रह्य है जैसे अधि यो रोधर होय त हुं जे रोध  
करिये तव सगरो अधिकार हर होय ज्ञाया और  
जैसे सूर्य को उदय भये पृथ्वी को अधिकार किया  
अमरीहर होत है तैसे ही महात्मन रूप जो को उदय  
मायावाद पृथ्वी उपर प्रगट भये है सो कह्यो जे  
जीवन को परम मोह उपजाये वेद पुरा एके अ  
खिल अर्थ विरूप एकर को दस मी वें या ऐकाद  
शीघ्रत जीवन को कराय जा ते और हं जीवन हि  
वहि मुख होइ और शिवायिक को फल को  
ता निरूप एकाये है ऐसे जीवन को अन्याय  
करिवाये ता ते सब जीव माया वाद के भरम में  
हैं वेद ते विरूढ़ आचर ए कयो लै व श्री ग  
कुर जी आप विचारै जो अवलुं थी उपर माया वा  
द वहुत प्रवर्त भयो है ता कर के देवी जीव वहुत मा  
या वाद के भ्रम में होय रहे है सो कह्यो ते जो देवी  
जीवन हं को संदे हर रह्यो है दृष्ट आश्रय श्री गुर  
जी को है तना ही हो या प्रकार श्री ग कुर जी आप

मनमें विचार करें श्री आचार्य महाप्रभु न को आज्ञा  
दीये। जो कुछ पृथ्वी पर प्रगट होवा। मायावाद को  
ले उन करो। ब्रह्मवाद को स्थापन करो। जे देवी जी  
व है। तिन को शरण ले के। उन के मन के नाना प्र  
कार के संदेह हों। तिन को दूर करे। और जो देवी  
जीव है। तिन के नाना प्रकार के मनोर्थ अंगीकार  
करे। ताव देवी जीवन को मेरा प्राप्ति होय। ताते  
पृथ्वी ऊपर पधारोई। रुकाय है। सो सुझारे बिना  
और कहा सो सिद्ध होय। गोनाही। ताते तुल्य यह  
कार्य करि वै मेरा समर्थ हो। या प्रकार श्री ठाकुर  
जी श्री आचार्य जी को जीवन ऊपर परम दया आई  
सो कहते। ओ श्री आचार्य जी। आप परम दयाल  
हैं। अपने जे देवी जीव है। तिन को दुरखरे चकह  
देख सकत नाहीं। ताते श्री आचार्य जी आप ए  
श्वी ऊपर प्रकट नये। ताव पृथ्वी परिक्रमा के भि  
स करि के पधारो। तातें कृष्ण देव राजा कै नें माया  
वादी को रुग जोड़ुते। तातें ब्रह्मव मार्ग के बडे बडे  
महत्त हारे दुता। ताही समर्थ श्री आचार्य जी महा  
प्रभु आप पधारो। ताव स गरी सभा देखि के तुरत  
हुकूम ठाटी भई। सो मानो परम र्थ  
स से पधारो। सो कृष्ण देव राजा ने श्री



२॥ सोबीनती की नीजी महाराज माया अस्वदु  
दिनते प्रवर्त होयर हे दे ता को अपविचार  
करिये तव श्री आचार्यजी आप अनेक वेदपुरा  
ण को दहा चंदे के माया वाद उठन किये तव श्री  
आचार्यजी महप्रभुन के खले सो स्नान कभे जाये  
ज्य प्राये को ईक दिन से एथी परिक्रमा करत श्री  
आचार्यजी आप अशो पधारे तहां अनेक माया वा  
दिनि सुवाद करि वे को आवते तव श्री आचार्यजी  
को से आ हो य जाती प्रसाद ले वे को आते तहां ता  
ई होव क सब वैश्व स्व को रुजत न लेते तव श्री  
आचार्यजी आप विचार को पचाविले वन ग्रंथ को  
ये सा पाछे जहां सब वाद विषय मे रनायजी के द  
से न को नित्य आवते तहां श्री आचार्यजी आप  
आ वसे वन ग्रंथ को आ से पच कियो महं सब वाद  
आय के दर्शन करत तहां पचावले वन ग्रंथ को  
देख के सब वाद को निरूपण करि के निरुक्त  
र नयो तव श्री आचार्यजी महप्रभुन के ई हा  
को ई वाद करि वे को आवते नाहीं या प्रकार मा  
या वाद को खेडन नयो वु प्रवाद को निरूपण  
नयो तव जितने वैश्व स्व से व कहुते तिन सब न  
को नि परम आनंद नयो तव देवा जी व जे हे सो

श्रीआचार्यजी के शरण जायेको। परममुखपा  
ये परमज्ञानेदभयो सो काहेतें जो पहिलमा  
यावादजो कोई तिमरसो सिसारसे बुझनेलो  
इहमी मोक्षतेमं जोजिअसो संदेहपुत्तो जेह  
एकप्रकारिके श्रीठाकुरजी को भजन हो तो ना  
हीना तेजवशी आचार्यजी आप परमतें जवान  
सूर्य प्रगटभयो तब मयावाद रूप जो अधका  
रत्ता को नाश भयो ताव वैभवशेवक को संदे  
हरूप जो तिमरलो ताको नाश भयो ताते  
दृढाश्रय करिके एक श्रीठाकुरजी को भजन  
करन लागे सो काहेतें जो ज होताई मनमें सं  
देह रहै चहुचाई फल की प्राप्ति हो नही याही  
सिंह गवर्द्ध जीता में अर्जुन प्रति श्रीभगवान  
कहे है जा संशय आत्मा विनश्यति जहां  
जीव को संशय भयो तहां या जीव को काह फ  
ल का सिद्ध नाही हो जहां दृढ आश्रय अनन्यता  
होया तहां सर्वफल का सिद्ध होय चुकी ताते  
जव अवशेष कन को संदेह निवर्ति भयो तव अ  
नन्यता दिड भई तव श्रीआचार्यजी को भजन  
करन लागे क्षापछ श्रीआचार्यजी आप ता  
को हरिकरिके भगवत् रशे वाप

नि सो प्रकर करिये हे जामें साचा तप (पुस्तक)  
समना ना प्रकार का सा विद्या आरोग्य जे सै  
परम मुंदर रज्जु मन रूप जो से वाचा को ची आत  
ये जो म हा प्रभु आ पकरि को स ग रे दो व क न को  
विखा वत है जो या प्रकार पुष्टि मा ग को आ  
चर ए क गो सो ओ गो व द न नाथ जी का रंवा  
ओ आ चर्य जी आ प प्र ग ट कर ॥ त हा ज न्म उत्स  
ज न्म ए सो ते ले के जे क त्स है तिन स व न को प्र  
ग प्र भ यो सो क है ते जो स दिते क त्स को प्र का  
र को क ज न त व द है ज व श्री आचार्य जी आप प्र  
ग र करिये हो पु क्त व व दिना के ना ना प्र क र को क  
त्स है तिन को प्र ग ट करिये त हा जै सरित हो य  
त हा ते सो रंवा ग न्म ग र श्री आचार्य जी आप श्री  
गो व द न नाथ जी को ध र व त है सी त काल में ग  
द र ओ र ॥ के ना ना प्रकार के व स्त्रा ओ र सु  
वर्ण के आ भूष ए ज र आदि स व रि ति क थ ग  
र ध र व त है जा गे ओ गी द ध र त है ओ र व  
सं त हो र मो ना ना प्र क र सो गु ल्या ल आ व र को  
वा स दिते ज न के जो मु गंध है तिन स दित रे  
ल्य व त है तो ए वी क त्स क ल मे व ही परम स त  
म पि जो रा पा ग हा के भ ग र कर त है श्री ओ ग

में न्याय प्रकर की सुगंध सहित। और अरगजा  
 को ले पत कर रहे हैं। मोक्षिन के आभर एधरावत  
 है। और अपने शेष कनकों वैष्णव को। शेष की रत्न  
 भांति सब सिखावत है। सो शेषा कैसी है। श्री गो  
 कुल जो है। चित्त के प्रति जो श्री गुरु जी तिन को सा  
 दात्त दर्शना। सा साक्ष से बंध होत है तहां। राणा  
 एवान क और हं। और राप्रगट होत है। सो कहते जो  
 और मार्ग हैं। ज्ञान मार्ग। योग मार्ग। कर्म मार्ग। उपा  
 सना मार्ग। तामें साधन न्याये फल न्याये हैं। सो कह  
 ते जो। जब साधन करो। तब को दे को कब हं फल होय  
 जैसे ज्ञान मार्ग है। तामें मन को तैदे हुमे ट के विष  
 यादि कमें मन न जाय। सगरी ईंद्र की सिधत क  
 रनी है। सो कहते जो। जहां तींद्र। ईंद्रा शिथिलता  
 न होय। तहां ताई ज्ञान को साधन नाही। वनि आवे  
 ता पाछे स्वासारे। कि कै प्राण के ब्रह्मा ठवठवने।  
 सो जब सीद्ध होय। तब क हं फल को देई। योगी ज  
 न जो ग साधत है। आत्मा को धारवत है। अनेक प्रका  
 र सो। स्वायं वे पावे को साधन करत है। तब कब हं  
 क कह को योग्या दिहोत है। चहूं में मेना न्या प्रकर  
 के कमें समय करनी। यज्ञादिक कर्म में जहां य  
 ज करत है। तहां अनेक प्रकार की सा

५०  
५१  
चाहिये। ओषधीप्रगटवाहिये। अनेकद्वय  
हिये। यज्ञदेवताजो श्रीभगवानहै। तिनकेना  
नाप्रकारकेसंचहैं। औरब्रह्मादिकदेवताकोभ  
गहैं। सोन्यारेन्यारेधरतहैं। तांमेंसबदेवतान  
कोमेंवसहितबलावतहैं। जोभलेनाहार  
चकहैं। भलेतोकायोकरायोसबनष्टहोयजाय  
सोकोहैं। जोयज्ञनष्टहोयें। कुलरोभष्टहोय  
जाय। तातेंयोगमार्गकर्ममार्गसबकाहूकोसि  
द्धनाहैं। उपासनामार्गमेंतानाप्रकारकेदे  
वताहैं। तिनकीउपासनाजीवकरतहैं। तांमें  
जवकहैं। निखिद्यतासोउपासनासिद्धहोया। त  
वकहैं। फलकीप्राप्तहोय। सोऊफललौकिककहैं।  
तातेंऔरजोमार्गहै। तिनकोसाधनन्यारोफल  
न्यारो। औरफलहैं। सबलौकिककैं। सोऊकलिके  
दोषकरिकैं। काहूकोसीद्धहोनदेतनाहै। तातें  
श्रीआचार्यजीमहप्रभुआपश्रीरामपुरुषोत्त  
मकीजोलीला। तिनहुंकाफलसोश्रीराकरजी  
तिनकीशोवा। फलहैं। श्रीराकरजीकाशोवा। ते  
सोफलरूपपष्टिमार्गहैं। सोश्रीआचार्यजीमह  
प्रभुननेप्रगटकायेहैं। जाहुंमेंकदाचित्तभल

हं पडे सो श्री गुरु जी प्रशन्न होय के हानन करे  
फल देवे मैं अंतराय न करे सो कहते हैं जो श्री ग  
कुरे आप परम दयाल हैं जी व करे च कहें जो शे  
वा है ता को व दत्त हो कर के मानत है ता ते साध  
न की ओर देखत ना ही है श्री आचार्य जी के कान  
ते जो वैश्वनाथ मिश्री भोग धरत हैं ता को अंगी  
कार करत हैं प्रशन्न होय के अरो गत हैं ता ते  
साधन ह फल रूप हैं और श्री आचार्य जी आप पु  
ष्टि मार्ग प्रकर काये हैं श्री गुरु ल के नाथ जो पूर्ण  
पुरुषोत्तम तिन को संवेध सादात होत है ता  
पाछे श्री गुरु जी की जो लीला नाना प्रकार की  
वाल लीला प्रोढ लीला कुमार लीला राज लीला  
इत्यादिक लीला के भेद जे हैं तिन के भावना ना  
प्रकार को संयोग रसा विप्रयोग रस ये दो रस  
को अनुभव होत हैं और वैश्वनाथ जी है देवी जीव  
हैं तिन के नाना प्रकार के पाप करि को श्री गुरु  
जी के चरणारविंद में प्राप्त होय तिन में जो प्रति  
बंध है सो श्री आचार्य जी आप करुण करि के स  
र्व शेष कन को शे वा करवाय के प्रतिबंध हर की  
ये है और जो आसुरी जीव हैं तिन को काम क्रो  
ध मद मात्सर्य बूढ ऊपाध कर के श्री आ

म. ५  
१॥  
श्रीमहप्रभुनके स्वरूप जानत नाहीं है ताते  
उलटो श्री आचार्यजी के महत्त्व देखि सुनके  
नो हकों पावत है सो कहते जैसे सूर्य प्रकाश  
त है परंतु जे आंधरे है तिनकों रात्रि दिन स  
व वरावर है उनको सूर्य को उजिया रोहुं सूरत  
नाह है ते से ही श्री आचार्यजी महप्रभु आप  
को देखि सूर्य समजिनकों प्रकार जगत में दर्शन दे  
त है अपनो प्रताप महत्त्व हुं जनावत है परंतु  
आसुरी जीव जौ है सो विवेक जान करि कै आंध  
रे है जिनकी कछु सूरत नाह है ताते श्री आच  
र्यजी के स्वरूप देखत है परंतु जानत नाह है  
कलटो मोह होत है सो कहते जौ वे आसुरी  
जीव है ताते उनको जानत नाह है और जे  
वे भव है सो श्री आचार्यजी को पूर्ण पुरुषोत्तम ही  
जावत है उनको वे से ही दर्शन प्रभु देत है और  
श्री आचार्यजी आप श्री गुरुजी के मुखारविंदरू  
प जो अग्नि है तारूप श्री आचार्यजी आप है ते से ई  
श्री आचार्यजी महप्रभुनको तप आत्मक पुष्टि मा  
ग है ताते यामार्ग में तह ताई दाल है जहां ता  
ई तप रूप जो श्री गुरुजी को विरह जो मोकों  
कव मिले जो जहां ताई ए सो तप नाह है तहां

तां देहि मार्ग को फल को पावे नही ॥ और जहां  
ताप या के दुःख में भयो तसुं लाला सहित श्रीगोव  
र्दन नाथजी आप आपनों दर्शन देहि ॥ जहां ताहि  
या को सित खान पान मेल ग्या दौ ॥ जहां ताई यहु जी  
व को शरीर को सुख ही चाहत है ॥ तातें वैभव  
जे हो ॥ तिन को महा प्रसाद ले नो सो श्रीप्रभुजी  
करु छिए जानि कै ले नो ॥ अपने शरीर को बाध  
लाना हो जान नो ॥ सो कहै ते जो शरीर को भाग  
विचारो ॥ तो विषयां शक्त प्रगट होय हैं ॥ और  
महा प्रसाद करु छिए जानि कै लेय तो ॥ श्रीराकुरजी  
किन जन में मन लगे ॥ और वस्तु कुं श्रीराकुरजी के  
महा प्रसादी करि को पहरि नो ॥ सो कहै ते जो ॥ दा  
स को ये ही धर्म है ॥ जो कृतम वस्तु लय सो प्रभुन को  
विनियोग करे ॥ प्रसादी हो ते ॥ निर्वाह करे नो ॥ सो  
कहै ते जो ॥ एक समय की नारदजी वैकुण्ठ लोक  
में श्रीभगवान को दर्शन करि वे को गये ॥ सो श्री  
राकुरजी विदुत हो स्तुतिकरा ॥ सब श्रीराकुरजी प्र  
शन्न होय के ॥ श्रीनारदजी सो कहै ॥ जो नारद अज  
हृत लस को महा प्रसाद देत है ॥ सो श्रीराकुरजी ने  
नारद को श्रीमहा प्रसाद को किन कामात्र ही ॥ यो  
सो श्रीनारदजी ले के महा प्रसाद को देव वर करि



कैवर्तही प्रशन्न भये ॥ सो आनंद में देहानु-  
धान रही नही ॥ ता पाछे श्री नारद जी अपने मन  
विचारे ॥ जो महा प्रशाद अकेले में कैसे लेहुं व-  
ई वैभव सों मिलिके लेहुं ॥ तब हृदय धिरे  
महा प्रशाद के पाव श्री महा देव जी हों ॥ तिन को  
मिल कै ली जीये ॥ ए सो विचारि कै श्री गुरु जी  
को दंडवत करि कै वैकुण्ठ तैं कैलाश में जा हां श्री  
महा देव जी हुते तह आये ॥ सो श्री महा देव जी को ना-  
रजी ने वहुत ही सन्मान कीयो ॥ एछे जो श्री नारद  
जी तुम कहते आये ॥ श्री गुरु जी आप प्रशन्न हो  
यकें महा प्रशाद दायें हैं ॥ सो में हृदय में विचारें हैं  
जो महा प्रशाद अकेले कैसे लेहुं ॥ महा प्रशाद व-  
भव होय ॥ तिन सों मिलिके लेहुं ॥ सो तुम वैभव हो  
ततें महा प्रशाद लेकें आये हों ॥ इत नो सुनत हों  
श्री महा देव जी को महा प्रशाद की महिमा का सु-  
धि आई ॥ सो महा प्रशाद को दंडवत करि कै ता पा-  
छे ता डव नृत्य श्री महा देव जी करन लागे ॥  
श्री नारद जी हले कै आनंद सों गान करन लागे  
सो कोई दीना ताई आनंद में नृत्य करत भये ॥  
ता पाछे शो त होय कें परम आनंद में श्री महा  
देव जी ओर श्री पारवती जी बंटे ॥ तब श्री पारव-

तीने श्रीमहादेवजी सो एहे ॥ जो महाप्रशद  
में जो लोक ह गुण है ॥ जो मैं जो सो आनंद है ॥ तब  
श्रीमहादेवजी ने श्रीपारवती सो कह ॥ जो हे  
पारवती महाप्रशद की महिमा को ब्रह्मा और दे  
वता जितने हे सो कहि वे मो सामर्थ ना हो है ॥ ऐसे  
श्रीमहादेवजी की महिमा हो सो कहते हैं जो महा  
प्रशद लेत है ॥ तिनको कोटि जन्मको अंतरा  
य है ॥ श्रीप्रभुजी की मिलवे को ॥ सो सब ह  
रहेत है ॥ और इसको यह धर्म है ॥ जो महाप्र  
शद होतें निर्वीरुकरे ॥ और अन्य प्रशदीखायुतो  
आनके विषय समान है ॥ सो कहते हैं जो ॥ ता दशह  
के श्रीगुरुजी आप के विना दीखायुतो या को द  
शपनो छू जाया ॥ सो कहते हैं जो ॥ महाप्रशद स  
मान या जीवकों ऊँह र को करन नही है ॥ महाप्र  
शद की महिमा तें विना साधन ही यह ससार  
समुद्र को तरे जात है ॥ ता तें महाप्रशद की म  
हिमा का पार नाही है ॥ और एक समय श्रीआ  
चार्यजी महाप्रभु आप पुरुषोत्तम से उपधारे ॥  
तहां श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कीयो ॥ सो एक प्रह

मृ० ॥ र दिन आ यो हूँ तो ता समय एक पंडित आयके  
श्रीमहप्रशादजी आचार्यजी को दीयो सो श्रीआ  
चार्यजी महप्रभु प्रशाद होयके लीयो ॥ ता दिन ए  
कादशी कृतौ सो श्रीआचार्यजी आपमहप्रशा  
दहस्तकमलमें ले कर को प्रगणा वेदशास्त्रमें  
महिमा कहहे सो श्लोक श्रीआचार्यजी महप्र  
भु आपकहन लागे सो महप्रशादकी महमाक  
हत्तके हत्त सगरो दिन वीर्या सगरी रात्रे वी  
र्यो ते भई ता पाछे प्रातकाल भयो तब श्रीम  
हप्रशादजी आचार्यजी आपलीये कछ देह  
ध्यास शरीर की बाधा न रखी सो कहते जो ॥  
श्रीआचार्यजी आप श्रीपुरुषोत्तम है रेका  
शीहं राखी ॥ श्रीमहप्रशादको महत्स्यहप्रग  
टकीये ॥ ओर शरीर के नित्यने नित्यक के क  
र्म हंजनाये ॥ सो कहते जो ॥ श्रीआचार्यजी आ  
पजो एकादशी कमर्या दान राखते तो एका  
दशीको ब्रित पृथ्वी ऊपर की ऊ करतो नाही  
ओर महप्रशादकी महिमा असीन राखते  
तो महप्रशादको महत्स्य पृथ्वी ऊपर प्रक  
को न करता ताते श्रीआचार्यजी महप्रभु राखे

नवमुक्तिकाविरचितो मुद्राविभक्तो मनो  
जकरयोः प्रिये सुमुखि रधिकावल न प्रिया  
तिशुभ्र भैरवो विदधती समां दोलनं हं  
जाति नंतर श्यामकांचके सुंदर कंकण शो  
भियत है। लापाछे सुवर्ण के पाट में प्रोथे जो  
डे सुवर्ण के फुल यांचितों कहे। और तदनं  
तरन ये मोती न करिकें रचे रचना का ये है  
हृदय संयुक्त धरत है। मन को रचे ए से दो  
कहा थ विखें धरत नई है। प्रिये सुमुखी रा  
धिकावल न जो श्री कृष्ण चंद्र चित्त की प्रिया  
सो अत्यंत सो भत है। ए लो कंकण का धरत ल  
म्य कवां ह डोला वत डोला का चली। सो रापी  
छे सुवर्ण के कंकण का के आनें द्य हित जो  
स्पाम पाट के फुंद ना शो भित है। तदनंतर न  
ये मोती के रचे आगे मोती के गज ए सो हर  
व संयुक्त मन को योग्य होय है। ए से दो कहा  
थ विखें धरत नई है। प्रिये सुमुखी सो श्री  
धिकावल न जो श्री कृष्ण  
या अत्यंत शोभायमान ।

॥ थ जोर कै डोलावत है ॥ ६२ ॥ जो ततः पश्चा  
चामीकर सुघटितो कस्तुरि तौ करवत  
यो ततः सा गौरांगी भरकत मया चांगदवरी  
सवाङ्कोर स्मन्मानसनयन पाशीविवधस्य  
येचेतः कासां प्रसन्नमहरत्नां पुजमुखि  
॥ ६३ ॥ अर्थ तदनंतर कंकण के पीछे सु  
वर्ण की सुंदर घटित दो कूटुधकामनोहर  
चूड़ी ॥ तदनंतर जो वह गौरांगी अंग भरक  
तमणि मय श्रेष्ठ अंग विखे जो वाज्र वंदवि  
जावट आ पुने दो कूटुवां हविखें धरत भई है  
सो यह है वह अंगदन होय ॥ यह अंतः कर  
के जोर नेत्र कुं पास फासी धरा है ॥ ये संधो  
न पद है कमल मुखी जो सी जो यह कोन  
को चित्त जो प्रसन्न कहते खें च करि कै न  
रन काये है ॥ हे कमल मुखी ॥ ६३ ॥ जो तदं  
लीषु दशसु विचित्रा मणि निर्मिताः न  
खां शुभ्र पिता रेजु मुद्रिकाः प्रियवदन भा  
॥ ६४ ॥ तदनंतर हेद शो अंगुली वि  
खें विखें विचित्र मणिकर निर्मित सो नर

केजाले तुमही पूजा करो। तब श्री गंगाजी ने  
 कहा अपने माता पिता सों जो फेर के मांगो  
 मति। तब उन ने कहा जो हम फिर नाही मांगे  
 गे तुमही पूजा करो। तब श्री गंगाजी स्वस्वरूप  
 ले आये। श्री आचार्यजी महोदय भुनका ल्या य  
 दीये। तब श्री आचार्यजी ने पंच पूजामें तो श्री गी  
 रधारीजी को स्वरूप को ले के अपने घर पधरा  
 ये ता पाछे चार स्वरूप फुत्तो गये। शंभु देवा भ  
 वानी स्त्री तिन को श्री गंगाजी में पधराय वे  
 ल्या गे। तब जो न्यारे स्वरूप सब बोले जो महारा  
 ज हम को तुम न मानो गे। तो हम को केन मानो  
 गे। तब श्री आचार्यजी ने कहा जो तुम को प्रस्था  
 व विवाहादिका कर्म में बुलावे गे। या प्रकार कह  
 के उन को जल में पधराया। श्री गिरधारीजी के  
 स्वरूप से फुत्तो। तिन को नाम श्री गोकुल नाथजी  
 राखे। तिन की सेवा पुष्टि मार्ग करी। तिसों क  
 रन लागे। एसी भाति सों श्री आचार्यजी अपने  
 पनों सों महत्स्य जगत्त में प्रकट किये। पुष्टि मा  
 गे जे हो तिन को प्रकाश किये। अपने शेष क

नकोंपुष्टिमार्गकोफलताकोदीयेगाते श्रीः  
चार्यजीमहाप्रभुआपअलौकिकस्वरूपप्र  
दहै॥ तेसोईपुष्टिमार्गकोअलौकिकस्वरूपव  
प्रगटहैएथ्वीपरप्रकाशहैभयोहै॥ तातेदे  
वीजीबहं श्रीः आचार्यजीकेशरणआपको  
ष्टिमार्गकोफलहैताकोपायकेसंतोषभयो  
याप्रकारतीनश्लोककोअर्थनिरूपएभयोहै  
आवचरर्थश्लोककोअर्थश्लोकचित्पांति  
त्यंचेन्ननिगमगतितापियदिक्रियासा  
तापिस्थाद्यदिनहरिमार्गेपरिचयः॥ य  
स्यात्तसोपिश्रीः प्रियपुतिरतिनेतिनिखि  
लेर्गुणैरन्यः कोवाविलसतिविनावल  
भवरं॥ ६॥ यत्तोअर्थी॥ श्रीः आचार्यजीम  
हाप्रभुनकोस्वरूपकेसोहै॥ काहतेजानो  
नजाईसोकाहतेजो॥ केसोईपंडितहोइनि  
गमजोहैवेदाशास्त्रपुराणतिनहंकेजानिवे  
मेचतुरहंआरसेदेइनिवर्तकहै॥ जगतमें  
बडीबडहै॥ येसोबूढ़वत्तपंडितहै॥ परं  
नुसोईश्रीः आचार्यजीकेस्वरूपकोजानवैमेसा

मध्यमाही है। काहेते जो पंडित को अपने पंडिता  
ई को चत है। ताते पंडित अंधकार के वस होय  
रहे हैं। सो श्री आचार्य जी महप्रभुन को स्वरूप  
को जाने नाही है। अपने योग ता वहुत जगमें  
मानि रहे हैं। तममें अभिमान रूपी जोमद है।  
तामे मत होय को श्री आचार्य जी आप <sup>पूर्ण</sup> पुरुषो  
त्तम है। तिनके स्वरूप को ग्यान नाही होत है। सो  
काहेते जो साधन जो है वेद तामें जो कर्म कहै है  
नाना प्रकार के। अग्नि होय यज्ञादिक है। तिनके  
साधन में लगै है। और वेद में को स्मर जो है।  
निःसाधन होय के श्री पूर्ण पुरुषोत्तम को भज  
न करनो। सो या प्रकार को अर्थ सिद्धांत है। ता  
को ज्ञान वेमें अभिमान करिके पंडित का बुद्ध  
रहा है। ताते ए सो सिद्धांत जातिवे को सामर्थ्य  
नाही है। ताते कलिके दोष करिके उन पंडि  
तन की कोई कथा सिद्धि होई आवत नाही है  
सो काहेते जो यज्ञादिक न को वहुत द्रव्य चा  
हिये। जाजा भोति की यज्ञादिक की जो जोसा  
मे गोस वज्र व मिले। ता पाछे यज्ञ कर



देवतानको आवगाहनमें चकरि के देवतान  
को मंत्र चकरि के देवतानको उलावत है तापा  
छे आसन देत है तापास्त्रे न्यारे न्यारे भाग सर्व  
देवतानको निकारत है सो देवता के क्रीयामें  
रच कहं भूल परे तो वह देवता पुत्र को नाश हं  
करे और पुत्र के करन वारे को भए करे ता  
ते या काल के रि के पुत्र हं सिद्धि ना हु होत है  
और होमादि क जो है ता में अग्नि को कुं ड करि  
कें नाना प्रकार का होम की सामि ग्री है तिन  
को जैसे वेद में कह्यो है सो सब ले के वेद रीति में  
धृत आदि दे के अग्नि में होमे चहुं रंचक  
हं मंत्र में तथा होम का क्रियामें भले तो सगरो  
की यो क रायो ब्रथा होय जाय और फल को ना  
श होय ता पाछे होम हं को करन वारे स्वदपा  
वे सो कहै तें जो या कस्ति पुत्र के दोष करि के  
अग्नि होत्र हं सिद्ध होय सकत नाही या प्रकार  
पंडित नाना प्रकार का क्रियामें मन लगाय के  
अभिमान वस होय श्री गुरु जी के स्वरूप को  
ज्ञान सकत ना हु है तो तें श्री आचार्य जी ॥

के स्वरूप को ज्ञान पेंडित न हे को कहें तो हे  
सो कहें तो जो ॥ श्री आचार्य महप्रभु न के स्वरूप  
को ज्ञान तव होय अव श्री आचार्य जी आप  
अनुग्रह करि के आपनो स्वरूप ज्ञावे। तव  
हुं जान्यो जाइना हुं तो कोटि कोटि साधन क  
से परंतु श्री आचार्य जी के स्वरूप जान्यो न जा  
या। सो कहें तो जो ॥ श्री आचार्य जी आप जव ए  
थी परिक्रमा तीन बार करी। हाव नाना प्रका  
र के पेंडित वडे वडे ज्ञानी मायावादी। अपने  
के शास्त्र के जानन वारे। सो श्री आचार्य जी को  
मिले कृष्ण देव राजा की सभा में। तहुं श्री आ  
चार्य जी आप सो चर्चा भई तहुं सब पेंडित हा  
रो। परंतु तहुं श्री आचार्य जी के स्वरूप को ज्ञान  
पेंडित न को न भयो। और सैव शास्त्र के जान  
न वारे पेंडित काशी हूं मैं मिले तथा श्री जग  
न्नाथ राय जी में मिले। और जहुं तहुं हूं मिः  
लो। तिन सब को श्री आचार्य जी आप निरुत्त  
र कीयो। परंतु तो हूं श्री आचार्य जी के स्वरूप  
को ज्ञान न भयो। सो कहें तो जो श्री आ

को स्वरूप को जान नही सकत है ॥ का  
हुते जो श्री आचार्य जी आप अपने स्वरूप को  
अनुभव उन को नही जनावत है ॥ कोहु जो  
देवी जव है ब्राह्मण तत्र वैश्य शूद्र स्त्री इत्या  
दिक पढे होय विना पढे हुं होऊ जो श्रीमहप्रभु  
के शरण आवत है तिन को ॥ श्री आचार्य जी आ  
पना मखमर्पण करवात है तिन को ॥ तिन को  
अपने स्वरूप को दर्शन देत है ॥ तिन को पुष्पा  
रि को फल जो श्री ठाकुर जी तिन की नाना प्रकार  
की लीला को अनुभवे ॥ श्री आचार्य जी आप  
करावत है ॥ ताते श्री आचार्य को स्वरूप ॥ श्री ठाकुर  
जी को स्वरूपता को अनुभव कछु पढे तै ॥  
चतुराई ते होत नाही ॥ जव निःसाधन होय  
कें दीनता करिकें बहु तही प्रार्थना करिकें श्री  
आचार्य जी के शरण आवे ॥ तव श्री आचार्य जी  
आप पुरमदया लहें ॥ करुण निधान हैं ॥ सात  
तर्पण प्रसूतोत्तम हैं ॥ सो जा जीव को अनुभव क  
एवें ॥ ता को फल सिद्ध होय ॥ ताते पुष्टि मार्ग फ  
ल है ॥ सो कृपा साध है ॥ साधन साधना ही है ॥

और श्री आचार्य जी महप्रभु आपके से है॥ नि  
गम जो है वेद ताही के हृदय को जानत है॥ औ  
र श्री आचार्य जी आप हं वेद के कर्म हैं॥ सो कर  
त है॥ और मन पूर्वक श्री गोवर्द्धन नाथ जी की  
शेवा हं करत है॥ त्रिकाल संध्या हं साधत  
हैं यज्ञादिक होम दान सब करत है॥ सो को  
न भ्रातृ सों करत है॥ जो प्रथम श्री ठाकुर  
जी की शेवा जो है॥ तिन सों पुरुच के करत है  
ताते श्री ठाकुर जी की शेवा तो आवश्यक क  
रनी॥ तामें अवकाश होपु तो कर्मादिक कर  
नी॥ सो कहते॥ जो आप हं ब्राह्मण कुल में अ  
वतार लीये हैं॥ ताते मयी दी राखे वे के लीये वे  
द के कर्म करत हैं॥ और श्री ठाकुर जी की शेवा सो  
तो मन पूर्वक परम प्रीति सों करत है॥ और अपने  
शेवक न को हं यही शिवा करत हैं॥ जो तुम ए  
ए पुरुषोत्तम की शेवा करें॥ ताते श्री आचार्य जी  
आप तो पूर्ण पुरुषोत्तम हैं॥ औ आप वेद की मयी  
दन राखे तो और को न राखे तो॥ और को  
वेद के कर्म करे न हं॥ ता के लीये श्री अ

आप पूर्ण पुरुषोत्तम हैं ॥ तिन के मर्यादा रति  
 वे के लीये करत हैं ॥ और मन पूर्व क श्री गोवर्द्धन  
 नाथ जी का सेवा करत हैं ॥ श्री विजयपति एसे  
 श्री कृष्ण जिन को देखिके कोटि कोट काम देव  
 कोटि कोटि रतिल आकां पावत हैं ॥ और जि  
 न के स्वरूप को ज्ञान वेदादिक न को अगम्य है  
 वेद हने तिन तिकहि ॥ श्री आचार्य जी के गुण  
 है तिन को गान करे हैं ॥ और मन करिके समु  
 अद्वैत के श्री आचार्य जी के गुण है तिन को  
 कोई वार नही पायो ते सैं ही ॥ श्री पूर्ण पुरुषोत्तम  
 जो विजय के पति तिन हंको स्वरूप को कोई ज्ञान त  
 नाही है ॥ सो कहै तो ॥ जो श्री राकुरजी है तिन  
 में तो जनेक गुण है ॥ ता करिके संजुगत है ॥ जित  
 नेक गुण एखुं प्रकट है ॥ सो सब श्री राकुरजी  
 में प्रकट है ॥ और श्री राकुरजी तो गुण करिके समु  
 वत्त पूर्ण होय रहै है ॥ एसे जो परे ते परे ॥ श्री पूर्ण  
 पुरुषोत्तम है ॥ तिन सों विलास यह जीव कसा  
 चाहै तो ॥ एक श्री आचार्य जी महाप्रभु न के चर  
 ए के आश्रय होये ॥ तब ही सिद्ध होये ॥ सो का

हेतो॥ जो विनावलभ जो है सो वरनामशेष  
हैं। सो कहें। जो और हं आचार्यनामधराये  
लीये है। तिन सब आचार्य में श्रीवलभ आचार्यजी  
आपशेष हैं। सो कहें ते जो। सब आचार्यके प  
ति हैं। मायावाद के कर्ता हैं। एमार्गके प्रकट  
करता हैं। ऐसो प्रताप अपनो एथ्वीरुपर श्री  
वलभ आचार्यजी ने प्रकट काये। ऐसो कार्यकाह  
सों न होय। ऐसो जो वलभ आचार्यजी सबके पति  
हैं। तिनके चरणरविंद को आश्रय छोड़के श्री  
पूर्णपुरुषोत्तम जो है। प्रियके पति न सों विनास  
काये। चाहुत है। सो अज्ञान करिकें मूर्ख है। सो  
काहें ते जो। श्री आचार्यजी को आश्रय छोड़िकें  
श्रीलकुरजीके प्राप्तिहायते को जंतन करत है  
और श्रीलकुरजी को प्राप्तिन को नाही होत  
हैं। काहें ते जो श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तो श्री आचा  
र्यजीमहप्रभु है। आपकृपा करिकें दानि दे दि  
तिनको सिद्ध होय। और को सिद्धि कवहं न हो  
य। कोट प्रकारके साधन करो परंतु फलकी  
प्राप्ति नही है। सो कहें ते जो। सबके पति हैं श्रीर

एक पुरुषोत्तम रूप जो श्री आचार्य महप्रभु ईश्वर  
के चरणारविंद के आश्रय जा जीवकों सिद्ध न  
भयो है ताके जितने कम नोर्थ है सो सब ख  
ली परत है ॥ कहते जो जहं पूर्ण श्री पूर्ण पुरु  
षोत्तम ते वही मुख्य भयो है तहं लौकिक पदार्  
थ है ॥ अलौकिक पदार्थ है सो कछु सिद्ध ना  
है तहं अरु जीव संसार समुद्र है तामें ना  
प्रकार के दुखः हो पावत है सो कहते जो  
श्री प्रभु न के चरणारविंद के आश्रय ऊन जी  
वकों नाहो है या हते भगवानने भगवत्  
तामें कहें जो हे अर्जुन जो जीव मेरे ते वही  
मुख है नो कोई कृतम कौ या करत है ताह को  
फल नाही पावत है ॥ और कृतम कार्य ऊन सो हो प  
नाही सकत है ॥ नाना प्रकार के विध्व पडत है ताते  
ऊन जीव को टि प्रकर साधन करो ॥ सो कृत राश्र  
म हो पावत है ॥ जो से धान में ते क ए जो है ता को  
निक सत्वे दा ता पाछे तु स है ॥ ता को कूरो तो हा  
थ में छाला परे ॥ परं वतु सरवस्तु निक से नाही  
सो कहते जो से सिं जो पूर्ण पुरुषोत्तम ते वही मुख्य

मयोः ताको लो किक अलो किक ककु  
हुना हु है। या हु तें श्री भा गवत में श्री ऊँ हव  
सो श्री रा कुर जी आप कह है। जो हे ऊँ हव जी  
वे व मे रो भ जन सु म र न कर तें हों। ता जी व को चा  
छा न स व व स्स का प्रा प्र हो त है। या ही तें पृथ  
रा ए में वृ ध जी ना र द जी प्र ति कह है। जो ना र  
ई जी व स ग रे ध र्म को क र न वा रे हो। जिन को  
न ए क श्री रा कुर जी में हों सो ध र्म को क र के च के  
जो र जो प्र णी श्री रा कुर जी के स र्व ध र्म ते न ए  
जो स ग रे ध र्म को क र के वा रे सौ ई है। जो श्री  
रा कुर जी के च र ण र वि द को न हु भ ज त है। जो  
श्री भा ग वत में राजा परि लि त प्र ति श्री शु क दे  
व जी कह है जो हे राजा या सं सार में श्री रा कु  
र जी के च र ण र वि द के भ ज तें को छ दु रा रो को  
ई सा ध न हु है। जो जी व श्री रा कुर जी के च र ण र  
वि द को भ ज त है। सो बि ना श्र म ही या सं सार स  
मु द को तरि जा त है। जो र जो जी व श्री रा कुर जी के  
च र ण र वि द तें वि मु ख है। सो र सो ई प्र का र सं सा  
र दुःख तें वि मु ख है। दुःख तें छू ट त ना हु है। जो र  
श्री रा कुर जी के च र ण र वि द को भ जन कर के



अनेक पापी जीव हुते सो मोक्ष के योग्य नही है  
 सो सब तरि गये है ॥ अजामेल ॥ गज ॥ गणेश ॥  
 गीधराक्षस ॥ प्रह्लाद ॥ विभाषण ॥ बलि ॥ आदि  
 देकों से सो श्री गुरुजी के चरण रविंद के भज  
 न को प्रताप है ॥ लाहो से श्री आचार्यजी महोदय  
 भुआप श्री पूर्ण परबोतम जो है ॥ तिन के चरण  
 रविंद के आश्रय विना भ्रज के पति जो श्री कृष्ण ॥  
 तिन की लीला है ता को अनुभव ना होत ॥ जे सो  
 हं पेड़ित है वेद शास्त्र पुराण सबन के जानत है  
 परंतु विना श्री आचार्यजी के चरण रविंद चर  
 ण कमल के आश्रय विना यह संसार समुद्र हं  
 को तरि नाही सकत है ॥ तो लाला को अनुभव  
 उन को कहते होय ॥ ओर जीव श्री आचार्यजी के  
 शरण आवे है ॥ सो श्री गुरुजी की लीला को अनु  
 भव करि के विना अमर्त्या संसार समुद्र को  
 तरि जात है ॥ अवया लोक में यह सिद्धांत भ  
 यो ॥ जो के सो हं पेड़ित होय सो पढे होय वेद पु  
 राण शास्त्र सबन के अर्थ के निरूपण करि बैवा  
 से होय ॥ ओर भोति भांति के वेदादिक कर्म है ॥ ति  
 न हं को करत है ॥ यज्ञादिक अनि होत है ॥ सब

भांति कीजीब करत हैं परंतु यह काल के  
दोष करिकें संसार समुद्र को तरि नाही सकत  
हैं सो कहते हैं जो विद्यु के मद करिकें अभि  
मानी है तातें उनको ऊँहार नाही होत हैं और  
जो जीव निःसाधन होय के दैन्य ता करिकें  
श्री आचार्य जी महप्रभुन के शरण आये है सो  
विना अमही यह संसार समुद्र को तरि जा  
तें हैं और श्री आचार्य जी आप जो वद के कर्मा  
दि करत हैं सो लोगन के देखाय वे केलीय बें  
और वेद कर्म या दारा खिंचे केलीये हैं और  
श्री आचार्य जी आप जो न करे तो काई न करे तो  
और श्री विज के पुति श्री ठाकुर जी आपुति न की  
शे वा में तत्पर रहें जीन को वेद ने तिनै ति क  
रि को एणु ए वरवान त हैं ए सो विजाधिपति  
के दर्शन की प्राप्ति विना श्री आचार्य जी महप्र  
भुन के न होय ॥ या प्रकार चार श्लोक को निरूप  
पण भयो ॥ अब और रूपांचो श्लोक कह  
त हैं ता को अर्थ निरूपन करे गे ॥ श्लोक  
मायावादिकरी दूदर्प दलने ना  
इत श्री महागवता ख्य दुर्लभ

एवेदोक्तिभिः॥ राधावल्लभनामधेय  
 सदृशोऽभावीनभूतोऽस्त्वपि॥ ५॥  
 आर्जुनमायावादरूपीजोकोईवढामतर्ह्योह  
 तिनकेरतनहारैरोसेथी आचार्यजीमहाप्रभु  
 प्रकटनयेहैसोकाहेतेजोभीभगवानकी  
 जोमहादेवजीकोभईतुममायावादएथ  
 उपरप्रकरिके मोहउपजावोतबथीमहा  
 देवजीनेथीठकुरजीसोंचिनतीकरीजो  
 मेजीवनकोंकौनप्रकारमोहितकरेओर  
 यहअपराधहैसोमोकोहोयगोतातेंजीव  
 कोमोहितकेसेंकरोंकलदोमेंआपकेचर  
 एरविंदकेसनमुखजीवनकोंकरुमेरोयह  
 धर्महैओरतुमारेचरणविंदतेंविमुखकों  
 नप्रकारकरेताबथीठकुरजीनेथीमहादे  
 वजीसोंकहेजोतुमकोयावातमेंअपराध  
 नहोयगोसोकाहेतेजोमेरीआज्ञाहैतातें  
 मायावादएथउपरप्रगटकरिकेमोहको  
 उपजावोमहाकलिकालएथउपरआयो  
 तातेंमायावादहैअवस्यकायोचाहयेजो

या भान्ति सों श्री गुरुजी ने श्री महादेवजी को आ  
जा दीयो। तब श्री महादेवजी संकराचार्यजी को  
स्वरूप धरिकें प्रगट भयो सो वेद तें विपरीत शा  
स्त्र वदुत्त प्रकट कयो। और गूटे मंत्र तें हं वदुत्त  
हो प्रकट कयो। जग की क्रिया हमें हं अष्ट हो रूप  
है। और गूटे मंत्र के फल हं अष्ट रूप हैं। इत्यादि  
कवली करण मंत्र वदुत्त कयो। जामें चूट कत्त रा  
काल देख के जीवकों मोह प्रगट होत है। और  
भान्तिके मंत्र जामें अर्थ हं कछू ना ही है। और  
वदुत्त ही जप हं ना ही परं सु सिद्ध है। जो या भान्ति  
सों। करिकें धन की कामना हो या और को  
चूरो करे। मंत्र को आधीन करिकें तिन के ध  
न सुगरो हरिलेत है। जो या भान्तियों इन मंत्र  
में सां मुख है। जो कछू सो इत मंत्र में है।  
और एकादशी जो चित्र है। ता हके विपरीत अर्थ  
निरूपण करिकें दशमी विधा एकादशी  
ता को करन लागे। सो एकादशी हं को फल नौ श  
भयो सो कहते। जो वेद में कहते हैं। जो दशमी  
विधा एकादशी कैसी श्री ग

रविंद ते वहि मुख हो ५॥ जे सें अमृत मुख  
के पात्र मे धरे है ॥ तिन में एक बंद मद्रा का परत  
वह सब मद्रा समान है ॥ ता को अ सुर पान क  
रत है ॥ ओर वेद में तुलशी का माला कहि है ॥ ज  
वेधम व तुलशी का माला पहिरे है ॥ तिन के स  
न मुख काला दिक आय नाहि सकत है ॥ ओ  
र श्री भगवान के चरण रविंद को पर मणि  
य है ॥ तुलशी का माला जो पहिरे ॥ तिन को  
भगवत्संबंध होय ॥ ऐसे वेद में कह्यो है ॥ सो  
शंका शचार्य तुलशी का माला छु डाय को रु  
त का माला पहिरावे को निरूपण काये ॥ ए  
सो जो रुद्रा तत्ता का माला जो पहिरे ॥ होय ता को  
पय प्रणामें यह कह्यो है ॥ जो मनुष्य मत्त की  
चिन्ता समान है ॥ जे सें चिन्ता स्वर श होय तो श  
चैतन्य स्नान कीये तें श्रद्ध होय ॥ ते में हुरुद्रा तत्ता की  
माला पहिरे होय ॥ तिन के स्वर श तें श चैतन्य  
स्नान करे ॥ तव श्रद्ध होय ॥ सो ए सो रुद्रा तत्ता की  
माला वेद ते विरुद्ध अर्थ निरूपण काये है ॥  
ओर सब देव तान के ईश्वर ए सो जो श्री भग

गानजीनको शिवारिकव्रजादिकभजनकर  
चहैं। तिमको भजनछुड़ावैंको शिवहीको मु  
खईश्वरनिरूपणकीयेहैं। जोयाभांतसोश  
करार्घ्यवेदतेविरुद्धहैं। एलोशास्त्रमायावा  
दकेप्रगटहोतहैं। हंकीयेहैं। जामेंवेदतोंविप  
रीतहोया। संगरीएथाकेजेजीवहैं तेसबभ  
जनये जोरदेवीजीवहैं तिनहंकेसंगक  
रिंकेसंदेहभयोहै। श्रीरामकुरजीकोदृष्ट  
यहुतोसोखूटगयो। उनमायावादकरिके  
सबनकाबुद्धिरहिगदा। त्वंश्रीरामकुरजीको  
दयाआईजोमेतोमायावादप्रकटकरिवेकी  
आज्ञा शिवजीकोदृष्टहोतीजोअसुरजीवको  
मोहकपजावेकेलीये। सोतोएबीरुपरमाया  
वादजैसोप्रगटभयोहै। जोमेरोमहत्त्वज्ञा  
नसबजीवभूलगयेहै। सोअवमेदेवीजीवन  
कोकोनप्रकारकाटो जायाभोतसोअपुन  
मनमेंविचारेजोमरीलीलाकोअनुभवजी  
वकोहोपता। तोजीवमेरेनिकटआवो  
लीलाकोअनुभवजीवकोकोनभांतिसे

तब विचारे जो लीला के अनुभव करवावने  
में तो एक श्री आचार्य जी को समर्थ है उन  
को पृथ्वी ऊपर प्रकट होय तो मायावाद को  
खंडन करिके देवी जीवन को लीला के अनु  
भव करवायूँ मेरे पास आवो सो यह का  
र्य श्री आचार्य जी आप बिना कह सों होय ना  
है सो कहते जो लीला के अनुभव करवायूँ  
में एक श्री आचार्य जी आप ही समर्थ हैं ताते  
श्री गुरु जी ने श्री आचार्य जी को आप मुनि  
कायकै कहें जो तुम पृथ्वी ऊपर पाधारे  
तो मायावाद के खंडन करिके देवी ज  
वन को मेरी लीला रस को अनुभव करवा  
इके मेरी निकट लेके आवो तब श्री आचार्य  
जी आप हं परम दयालु करुण निधि को दया  
आई देवी जीवन ऊपर देवी जीव हमा  
रे है सो मायावाद के भ्रम करिके श्री गुरु जी  
के चरण रविंद में दृढ़ आश्रय ना ही होत  
है ताते ऐसे विचार के श्री आचार्य जी आ  
प पृथ्वी ऊपर प्रकट भये हैं ता पाछे ए :

श्रीपरिक्रमा आपकीये॥ तो सगरे देवीजी व  
हं मायावादके साथ में मिलि कै वे सोई करन  
लागे आचरण॥ सो श्रीआचार्यजी महप्रभु प्र  
आप पृथ्वी परिक्रमा करि कै श्रीगोकुल पधा  
रे॥ तहु श्रीगुरुशरी घाटहो॥ और गोविंद  
टके ऊपर एक चौतरो हो॥ तहु श्रीआचार्यजी  
आप पोटे फुतो॥ तहुं धौकर कोट लहै ताखे  
कर भगवत् रूप हो॥ ब्रह्म छोकर वाकाना  
महो॥ तहुं श्रीआचार्यजी आप पोटे फुतो॥ सो  
जीवन के द्वार की मन में विचार हतो॥ जो  
जीव तो दोषनिधान हो॥ और श्रीगुरुजी तो  
गुणनिधान हैं॥ तिन सों संबंध जीव को कोन  
भांती सों होय॥ ऐसी चिंता अपने मन में करत  
फुतो॥ तव श्रीवराह मुक्त पत एक दशी का शु  
ईशचिर्की॥ श्रीगुरुजी प्रगट होय ब्रह्मसं  
बंधकी आज्ञा दीये॥ जो जीव को ब्रह्म संबंध  
तुम करोगे॥ तिन के सकल दोष निवर्त्ति हो  
यगे॥ जो या प्रकार श्री पूर्ण पुरुषोत्तम ने आ  
ज्ञा दीये एव तव श्रीआचार्यजी आप विनाय



हनु होय तासमें मिश्री को भोग धरो तापाछे  
दामोदर दस दुर साना लो श्री आचार्य जी आ  
पकहे जो दमला ते कछ सुन्यो तब दामोदर  
दसने कह जो महाराज श्री गुरु जी के वच  
न तो सुने परंतु समुदना ही तब श्री आचार्य  
जी आप अपने वैभव के सम रूप वेकली ये  
सिद्धांतर हस्य ग्रंथ आप प्रकट कीये या भा  
त लो ब्रह्म से वध की आता श्री गुरु जी दीयो ता  
पाछे श्री आचार्य जी आप मायावाद को देखे सो  
मायावाद के सो पृथ्वी रूप प्रकट भये हैं जो से  
मत्त हृथी का हू को गिने नाही है तब श्री आचा  
र्य जी मह प्रभु आप सिंह रूप जो ब्रह्मवाद प्रक  
ट करि कों मायावाद को विदारन कीये श्री भा  
वत में जो श्री पूर्ण पुरुषोत्तम रूप जो अमृत से  
जीवन को अत्यंत दुर्लभ है सो श्री आचार्य जी  
आप श्री स्वोधि नीली आदि ग्रंथ प्रकट  
करि कों श्री पुरुषोत्तम की लीला रूप अमृत से  
अत्यंत दुर्लभ है तिन की वरखा अपने शेष  
करु पर करे हैं सो कहते जीव जाने क काल

के बिछूरे कुत्ते। तब मैं माया धाद करि के ते कु  
 तहें। मलिन कुत्ते। धोर श्री आचार्य जी मह प्र  
 भु आपने श्री पूर्ण पुरुषोत्तम काली लाहें। तिन  
 की वरखा करा। सो देवी जीवन के दुद में संदेह  
 जो भोति भोति के कुत्ते सो दूर भयो। तब जे शेव  
 क जन परम आनंद पाय को। श्री आचार्य जी केश  
 रण आवत हों। तब श्री आचार्य जी आप नाम सम  
 र्पण को दाम देवी जीव कुत्ते पर कृपा करि करवा  
 यो। ता पाछे कोटि कै दप लावण श्री पूर्ण पुरुषो  
 त्तम आदि। श्री चंद्रावन मे ससा दिली ला नित्य  
 करत हों। ऐसे रूप जो श्री कुक्ष तिन की सेवा  
 को रूप देश श्री आचार्य जी मह प्रभु आप कर  
 त हों। धोर श्री आचार्य जी मह प्रभु आप गो व  
 र्द्धन नाथ जी की सेवा करि कै। जीवन को व  
 तावत हों। या भांति सों सेवा करो। सो सेवामें  
 उपर तो देखि वे में तो श्री नंद राय जी के धर की  
 रि ति हों। बावली ला देखावत हों। धोर श्री तर  
 तो निष्केवल ब्रज भक्तन करी। तिकी सेवा है।  
 ता हुतें प्रेम मार्ग कहियत हों। सो सवर सेन  
 से उत्तम रस सृष्ट गार रस हों। ता काली ला स

हितभावहृदयमें राखनो ॥ यही उपदेश श्री आ  
चार्यजी महप्रभु अपने दो वक्त्रों कर रहे हैं  
तामें प्रथम श्री गोवर्द्धन नाथजी की सेवा से  
कहत हैं ॥ जो ऐसे श्री कृष्णजी हैं ॥ श्री एण पु  
रुषोत्तम हैं जो सारस्वत कल्प में प्राकट्य की  
ये सा श्री पुरुषोत्तम हैं ॥ श्लोक कल्प सारस्वत  
प्राण विज गोपी भविष्यति ॥ इति च श्री रक्त  
में एण और नाहीं ॥ और स्वतः वाराह कल्प में  
जुन की गीता भगवत गीता नामें उपदेश  
दाये हैं ॥ श्लोक कल्पे स्मिन् सर्वं मुत्स्यार्थं भव  
तीति सि सर्वतः ॥ इति वाक्यं ताते ॥ शेष  
यकथनीय ॥ भजनीय एक श्री कृष्ण हैं ॥ श्री गोव  
र्द्धन नाथजी हैं ॥ सो कै सो है ॥ जो श्री दत्तिए हस्त  
कामू रावाधी हैं ॥ तामें अंगुष्ठ दिखावत हैं ॥ तामें  
यह भाव है ॥ जो व्रज भक्त न के मन को हरिके ॥  
ता पाछे अंगुष्ठ दिखावत हैं ॥ तामें यह भाव है ॥ जो  
व्रज भक्त न के हरिके ॥ ता पाछे अंगुष्ठ दिखाव  
त है ॥ जो अवतम के हा जावगी ॥ और दत्तिए नु  
जाऊ गये के ॥ व्रज भक्त न को बुलावत हैं ॥ जो तु  
म वे गि हूँ आवा ॥ हम रासादिक लीला जो या भा

सिखो करे हि मे और आपने कुंज के द्वार ठाठे हैं ता  
में श्री आचार्यजी आप सों जताव चहें यह जो  
तव साईं में दू हां ठाठे हैं ज हां चाई मेरे देवी जी  
व है। तिनको तुर्यो ह्यारे द्वार श्री गी कार करने  
है। ताते वै धनव को ए सो जानीये जो तए एक  
श्री गोकुल के पति हैं श्री गोवर्द्धन नाथ तिनको  
भूल नो नां हो। जो जीवन के लीये अपनी कुं  
ज के द्वारे ठाठे हो इरहे हैं। और जीव यहु भट  
को भट को डोलत हो ताते ए सो भाव विचार कि  
श्री गुरु जी सों आप हो। बडे बडे अवतार भये  
हैं। और ज्ञान रुषि हं वरुत भये हैं। मुनी चर हं  
साहिब भये हैं। और आचार्य हं क हवाये हैं। पर  
तु पुष्टि मार्ग की रीति सों कीई जानत न हो। हुं त  
ताते काह सों एष्टि मार्ग प्रकट कायो न। यो श्री  
र काह को पुष्टि मार्ग को फल हं न भयो है। सो का  
होतै। जो कीई सेवा को प्रकट जानत ना हो। है  
ताते काह को सिद्ध हं न भयो। और जे भये है तिन  
को मुक्ति हो। सिद्ध करि न ते होत हो। जो भक्त मार्ग  
और को न जाने पुष्टि मार्ग की रीति को और को

कहजाने ताते श्री आचार्यजी आपसमान हूँ  
रोनकोई भयान कोई हैं न कोई होवे गो सो  
काहेते जो श्री आचार्य महप्रभु आप दोरुभाव  
हैं श्री गुरुजी श्री स्वामिनीजी सों कब हं से  
योगरसमें मग्न रहत है सो सेवा रूपनाप्र  
कार काये हैं प्रथम श्री यशोदाजी के ईहों श्री  
गुरुजी बाललीला करी है सो स्वरूप श्री नवनी  
त प्रियाजी हैं जो नवनी तहस्त कमलमें ली  
ये हैं श्री यशोदाजी के आंगनमें रिग्न लीला  
करत हैं आपनो प्रतिबिम्ब मणि जटित रख  
भमें देखि के पकरि वे को धावत हैं ता पाछे कि  
ल कि के हंसत हैं सो बाललीला को प्राग्यु  
श्री नवनीत प्रियाजी की सेवा में प्रकट देखिय  
त हैं जोर श्री यशोदाजी के ईहों वडे भये तव  
गो चार एलीला कये माखन की चार लीला क  
ये हैं सो स्वरूप श्री मथुरानाथजी को हैं जो स  
मय श्री मथुरानाथजी गोपिकान को ले के श्री  
स्वामिनी के धरप धारे हैं तहं दूध दही माख  
न की चोरी करत में ऊहं एकांत में श्री स्वामि

नीजी आशितव कहै जो। आज में पकरिके श्री  
नंद रायजी श्री यशोदाजी के आंगे ले के जाऊ  
गी। तब श्री मथुरा नाथजी के दोऊ भुजा श्री स्वा  
मिनीजी पकरे हो। तब श्री मथुरा नाथजी आ  
र दोय भुजा प्रगट करिके श्री स्वामिनाजी सों  
विनती काये। जो में तुझारो वस हो। तुम को पा  
स ही राखत हो। मेरे नीचले हस्त में संख है। सो  
तुझारे श्रीवा के आकार हो। ताते में धारण की  
ये हो। ऊंचे श्री दत्ताण हस्त में पुष्प है। सो कमल  
वत्त हो। तुझारे मुखार विंद हो। कमल वत्त तु।  
झारे हस्त है। कमल वत्त तुझारे चरण हो। तिन  
के आकार में धारण कीये हो। ऊपर बांम श्री हस्त  
में गदा है। ताको तुझारे कुच कुंकुम कलश के आ  
कार है। राखे हैं। तथा श्री हस्त कमल में कंक  
ण है। ताकी आकृति करिके में आपने श्री हस्त  
कमल ही में राखत हो। ताते मो के छोड़ि देऊ  
तब स कल अर्धा राम तु को पान करिके छोड़  
दये हो। श्री सीलीला को भाव श्री मथुरा नाथजी  
में हो। कात्यायनी व्रत व्याज। अंब श्री गोपि  
काने काये हो। ताव आप चीर हृदय नलीला

ये सो स्वरूप श्री विठ्ठलेश रायजी को है। सो श्री  
 स्वामिनी जी के आव में मग्न हैं। ताते गौर स्वरूप  
 रूप है प्रगट। सो वस्त्र चोरी में जो श्याम स्वरूप  
 पहें। तो सब गोपिका श्री गुरुजी को जानि  
 जाहि। ताते श्री विठ्ठलेश रायजी हं गौर स्वरूप  
 रूप है। वस्त्र चोरी के कंदव ऊपर जाय वे वै  
 ठे हैं। ता पाछें गोपिन के मन में जो लज्जारूप  
 अंतराय रह्यो है। सो श्री विठ्ठलेश राय दूरिक  
 रि कै सब के वस्त्र हरे। यह लीला श्री विठ्ठलेश  
 रायजी के ईसं प्रगट है। अवरा संपंचाध्याइ में  
 मुरली वजाय के प्रथम श्री प्रिय भक्तन को बु  
 लाये के पुलिन में घर में रहे हैं। सो स्वरूप श्री  
 द्वारकानाथ जी को है। सब गोपिका पुलिन में जो  
 बैठी हैं तहां मध्यावीच में श्री स्वामिनी जी विरा  
 जत हैं। तहां श्री गुरुजी के और की सखी स  
 न्मुख बैठी हैं। तहां श्री गुरुजी अचानक पधारे  
 हैं। तब सखिन को समस्या सो वरजी पीछे से  
 दोय हस्त से बैठा बाँध के सो या प्रकार रसम  
 यलीला श्री द्वारकानाथ जी के ईसं प्रगट है।

शुभश्रीगोकुलनाथजी हैं सो गोवर्द्धनधारण  
काये हैं। सब विजभक्तन की रक्षा काये हैं। सब  
कवहं वामघी हस्त सो श्रीगोवर्द्धन को उठाए हैं  
कवहं दक्षिणघी हस्त सो श्रीगोवर्द्धन उठाये हैं  
तत्तं श्रीगोकुलनाथजी को दर्शन करत येही  
भावलीला सहित स्फुरत हैं। शुभश्रीगोकुल  
चंद्रमाजी को स्वरूप हैं सो साक्षात् कोटि म  
न्मथः मन्मथः जो गोपिकान सो रासपंचाध्या  
ई में श्रीगुरुजी अंतर ध्यान भये हैं। ताया  
छैं गोपिन के रूदन कीयो ताहें प्रगठ भये हैं  
सोललित त्रिभंग स्वरूप हैं पाछें महाराज भ  
यो है। सब आप दोऊ श्रीहस्त सो मुरली बजाय  
कैं सब विजभक्तन को रसदान करत हैं। सो में  
वैष्णव में वेध सात हैं। सो छह धर्म एक धर्मी  
हैं ताके रूप रंग गुरी धरकें ब्रजभक्तन को  
समाधान करत हैं। सुद्वारा भक्तिके में बस  
हैं। शुभश्रीमदन मोहन जी के स्वरूप को भाव  
यह है। जो निकुंज दिक के भीतर नाना प्रका  
र की विहारलीला करत हैं। सो कोटि कोटि।



कामदेव देखि कैल ज्ञा को पावत है त  
 हां भान्ति भान्ति कर समई लीला है ॥ और हां  
 गोद के श्री गुरुजी हैं त हां भान्ति भान्ति कल  
 ला है ॥ अब श्री हरिकानाथजी की गोद के श्री व  
 लकृष्ण जी हैं तिन सकट भजन लीला क  
 ये है ॥ और श्री मथुरा नाथजी के गोद के ॥  
 श्री नटवरजी हैं सो लीला तरणावत के प्र स  
 ग की लीला प्रकट काये है ॥ जो या हां भान्त सो  
 श्री नवनीत प्रियाजी के पास श्री बालकृष्णजी  
 तथा श्री मदन मोहनजी हैं ॥ सो जे भान्ति ला है  
 और श्री गोकुलचंद्रमाजी पास श्री बालकृष्ण  
 जी हैं ॥ त हां ऊल खिल लीला प्रकट है ॥ और  
 श्री आचार्यजी महाप्रभु के श्री गुसाईजी के ॥  
 ये सब स्वरूप वस है ॥ तिन सब न में श्री गोवर्द्ध  
 न नाथजी लीला प्रकट है ॥ सो या भान्ति जो स  
 व स्वरूप न का रोवा है सो श्री आचार्यजी महा  
 प्रभु आप प्रकट काये ॥ जामे प्र ए लीला प्रकट  
 है ता ते श्री आचार्यजी आप समान को ई भयो  
 न को ई है ॥ न को ई होय गो ॥ जो या भान्त सो पा

च श्लोक को अर्पित रूप ए भयो है। अवश्या  
हं छटे श्लोक को निरूप ए करत है। श्लोक  
यदंघ्रिनखमंडलप्रसृतवारिपीयूषयुग  
वरांगरुदयैः कलिस्तृणमिवेहतुषीकृत  
विजाधिपतिरिदिराप्रभृतिमृग्यपादं  
वृजः दोषेनपरितोषितस्तदनुगतत्वमे  
वास्तुमे॥६॥ याको अर्थ अवया श्लोक मो  
करत है। श्री आचार्यजी महप्रभुनके  
नखचंद्रमा जो है। सो मेरे मनमें जो नाना  
प्रकार के अज्ञान रूप अंधकार है। ताको  
हरिकरन हारो है। श्री आचार्यजी के नख  
चंद्र है। सो काहे ते जो श्री आचार्यजी के न  
खचंद्र में वजो प्रताप है। जो रात्रि को प्रकाश  
करो। ओ एण मासिके रात्रि एण हो दृष्ट दे  
वडे। जो रसूर्य के आगे प्रकाश मंद होय जा  
य। एसी लौकिक चंद्रमा गुण है। जो र श्री आ  
चार्यजी के नखचंद्रमा के से है। सदा एकर  
मंजिन को प्रकाश है। तिन के नख  
पर कोटिक चंद्रमा वारिजारि

के मख चंद्र को प्रकाश औ सो सो श्री आचार्य  
जी के मख चंद्र है चरण कमल को जो चलो  
कि कर्म तहै ॥ तिन के हृदय में सो परम  
निर्मल है निर्विकार है ॥ संसार के दुख सुख  
तिन को तुच्छ करि कै जारि दिये है ॥ सो कहै  
तें जो ॥ जहां एक चंद्र मा होत है वहां अधिक  
र आयस कत नाही ॥ श्री गुरुजी काली लो  
को अनुभव होन लागे ॥ तह कलिके जय  
धर्म संसार के सुख की को कहौ देवलो कई दुल  
कन के सुख ब्रह्मादि कन के कलोक के सुख  
शिवादिक के लोक को सुख तुच्छ करि जार  
देत है ॥ याहु ते श्री भगवान् में श्री गुरु देव  
जी या जा प्ररितित तें कहै है ॥ जो जीव को  
संसार के सुख दुख तहें ताई प्रिय लागत  
है ॥ जह ताई श्री गुरुजी के चरण रविंद  
को सुख ना हो पायो ॥ और याहु ते श्री भगव  
दीता में अर्जुन प्रति श्री भगवान् कहै ॥  
जो हू अर्जुन यह जीव जहें ताई मेरे चरण  
रविंद को सुख को ना हो जानत है ॥ तहें ता

इस हंजो संसार के सुख हैं तो दुख रूप ही है। ता  
ता के सुख मानि के के लो ग कर च हैं। आरज  
व मेरे चरण रविंद को महुत्स हृदय में आ  
वत हैं। तब संसार सुख को लुच करि के  
छो डत हैं। सो कहते हैं जो मेरे चरण रविंद  
हृदय में आयो। तब हंज विद्यारूप जो कोई  
नाना प्रकार की विषय वासना सो दुरि हो  
य जात हैं। सो कहते हैं जो श्री गुरु के चर  
ण रविंद के से हैं। जिन को श्री लक्ष्मी जी आप  
ने हृदय में लगाय के। परम प्रेम सो सेवन  
करत हैं। आर श्री गुरु जी के चरण रवि  
ंद के से हैं। जो श्री दारि काली लामे आबते  
पठ राणी हैं। ओ सार हू आर एक सो रानी  
है। सो सब श्री गुरु जी के चरण रविंद परम  
प्रेम सो सेवन करत हैं। आर श्री गुरु जी के  
चरण रविंद के से हैं। जिन को ब्रह्मादिक  
शिवादिक नारादिक बडे बडे मुनि श्वर  
सिद्ध ध्यान करत हैं। ए सो ही जो श्री आचार्य  
जी के चरण रविंद तिन को जो ५५ :

लगायकों सुम एकरत है ॥ एक त ए ॥ हं  
लक्ष्म्या है ॥ तिन की अस्तुति श्रीगुरुदेव  
आप श्रीगुरुदेव करत है ॥ जैसे दामोदर  
सहरसा ने ॥ ओ कुभन दस आदि प्रभृति  
तिनेक हृदय कमल में ते श्री आचार्य जी आप  
एक त ए ॥ हं वाहरना है ॥ र हत है ॥ ऐसे जो  
भगवदीय है ॥ सो आप प्रहर श्रीगोवर्द्धन  
नाथ जी की लीला को सर्वसाधन करत है  
जो प्रहमार्ग को फल है ॥ तिन की अनुभव  
रत है ॥ जाविना त ए ॥ र ही सकत ना है  
एसे श्री आचार्य जी मरु प्रभुन के चरणारविंद  
में गुण है ॥ जो श्री आचार्य जी के शरण आप के  
दृढत्व करि के नानन्य होय के ॥ चरणारवि  
ंद को शिवन जो करत है ॥ तिन के हृदय में श्री  
गुरु जी आपनी लीला को अनुभव करावत  
है ॥ सो कहत है ॥ जो के सोई उह हीन होय ॥ साध  
न में रहत नही ॥ श्री है ॥ अथ वा प्रहोय ॥ जो  
श्री आचार्य जी के चरण कमल को दृढ आश्र  
य होय ॥ तिन की स्तुति देवता करत है ॥ मे सो

श्रीआचार्यजीमहप्रभु आप श्री पूर्णप्रभुको  
तमहै॥इनकेसमान पृथ्वीऊपर दयालको  
इनहैहै॥जोनिःसाधनजीवनकोपरमफ  
लरूपश्रीपूर्णप्रभुकोचमहै॥तिनकीलीलाको  
अनुभवकरवाये॥जोयाप्रकारसोंबहुश्लो  
ककोनिरूपणभूयोभावसप्रमश्लोकको॥  
निरूपणकरतहै॥श्लोकःअधोधतमसा  
वृत्तं कलिभुजं मासादितं जगत्तद्विष  
यसागरे पतितमस्वधर्मे रतां॥यदी  
क्षणे सुधानिधः समुदितो नु कं पा मृता  
दमृत्युमं करोत्तत्त एादरमस्तु मेत  
त्यदा॥७॥याकोअर्थःअवंगागेहंकह  
तहैजीवकेसोहैअधकारवानहै॥औरता  
मसकोधादिहहै॥श्लोकलिजोहोमहभारी  
संघहै॥सोयाजीवकीनानाप्रकारकीपृथ्वी  
ऊपरनाचनचावतहै॥यहजगत्मेंविषया  
दिकजोसंसारमेंनानाप्रकारकेदुःखसुख  
स्वरूपसमुद्रहै॥तिनहीमेंडूबरहोहै॥

८-५  
११

ताको नाम महापति तक हि ये जाको  
हारना हु है ऐसो दुष्ट जीव है सोऊ जौ श्री  
आचार्य जी महाप्रभु न के शरणि आवे तो  
ताके हंत तत्काल सकल दोष हरि होय जा  
त है ता ह को पुष्ट मार्ग को फल जो है ति  
नको श्री आचार्य जी महाप्रभु आपदा न  
रत है ऐसे श्री आचार्य जी आप पुरम दय  
ल है पति तब पावन हो देवी जीवन को  
उधारथे जिन को प्राकप्र है पर जे वै  
धमव श्री आचार्य जी के चरण कमल को आश  
य दृढ करिके आपने हृदय कमल में रखे  
तिन को यह कलिकाल महासर्प है स  
रे संसार को आस ता है करत है काल के मु  
में सब पी जात है ऐसो जो काल है सो को  
ते जो वैधमव श्री आचार्य जी महाप्रभु ए  
रूपोत्तम ता के चरण रविंद आपने हृदय  
कमल में रखे है सो प्रसिद्ध श्री गुणार्द्र जी  
की वार्ता में लिख्यो है जो ब्राह्मण ब्राह्म  
श्री गंगा जी के तीर श्री ठाकुर जी शंवाकर

और गायन की सेवा हूँ आच्छा भक्ति सो करे  
 है। गाय को रास खवावत है। सो धोय पौध के  
 खवावत है। सो मत्त कहूँ इधु मोर ज आवे ॥  
 श्री ठाकर जी तो परम समुद्र हैं। पा प्रकर प्रे  
 म सहिता श्री ठाकर जी की सेवा करत तत्तिन  
 के पास एक पंडित ब्राह्मण आये। सो सगर दे  
 श तो पंडित को जीत के आये हैं। सो तहं वै  
 श्वपासर ह्यो सो वैश्वपासर। सो वैश्वपासर  
 मोग करि के लावत फुत्तो। तामें ब्राह्मण ब्राह्म  
 णी और वह पंडित ब्राह्मण। श्री ठाकर जी पी  
 छे ईन तीनों जनेन को निर्वाह होतौ। पाछे पं  
 डित ब्राह्मण ने एक दिन देखो। वा वैश्वपासर  
 न के चंग को चिन्ह देख से मे आयो। जो कालि  
 या को यह दोष कलंक माथे आवे गो। ता सो  
 रा० जाया को सूरा देई गो। ता पाछे पंडित ब्रा  
 ह्मण ने यह मन में विचारि हो जो मे ईन के पा  
 सव फुत्तर रहत हूँ। ए सो वह पंडित ब्राह्मण वि  
 चारि को। ता पाछे प्रातः काल भयो तब वैश्व  
 वपासर के द्वारे ऊपर वह पंडित ब्राह्मण



हरहो॥ और ब्राह्मणी रसोई करे॥ और वैष्णव  
ब्राह्मण श्री गुरु जी की सेवा में गला तैले व  
रकों थेंगर टाक करिकें॥ और धरि कें भाष  
बाहिर वैघौ फुत्तो॥ ईतने में वैष्णव ब्राह्मण क  
पलक लागी निद्रव शभयो॥ तामें स्वप्न आ  
यो॥ मानो को दरजा के मनुष्य आयें हैं॥ सो मे  
को ले गये हैं॥ जा पाछें मो को सूरि दये हैं॥ ए  
सो स्वप्न में देखि कें चौकि पसो॥ तब वह वै  
ष्णव ब्राह्मण जाग्यो॥ जा पाछें वैष्णव ब्राह्मण  
ने अपनी स्त्रियों क ह्यो॥ आजै सो स्वप्न दे  
ख्यो॥ तब ब्राह्मण ने वैष्णव ब्राह्मण सों क ह्यो  
जो शरीर को भोग्य हुतो सो सब निवर्त भ  
यो॥ और तुम छवें गये हैं॥ ताते जा पकें शी गं  
गा जी में स्नान करो॥ तब वह वैष्णव ब्राह्मण फे  
र स्नान कियो॥ जा पाछें राज भोग श्री गुरु जी  
को धर्यो॥ जा पाछें सम पभये तब राज भोग  
सराई कें शरती करिकें॥ अनो सर कियो॥ जा पा  
छें चौर पातर परोसी॥ एक गायकी॥ एक बापुं  
डिचकी॥ दोप अयने पुरुष स्त्री की॥ तब प्रचें वह

वैष्णवब्राह्मण वापेंडितब्राह्मणकेसोंकह्यो जो  
चलोमहुप्रशादलेहु तववापेंडितब्राह्मण  
नेवावैष्णवब्राह्मणसोकह्यो मेतोअवही  
स्नाननाहीकयोहों मेतोतुसाराधारउप  
रप्रसकालतेंवैद्योहों जोआजतुमकोप्रह  
असाध्यखोटोआयोहै सोमविचारवाहि  
रनाहीगयोहों सोअवताईकबूहंभयोना  
हीसोयाकेरणकह्योहैं तववावैष्णवब्राह्म  
णकह्योहैं तवमेरीआखिलागी तास  
मथमोकोरजाकेमनुष्यआयेसोमोकोलेजा  
यकेसुरादयो तवमेरानिद्राचौकिपओ  
तापाछेस्नानकरिकेभोगसरायो तातेंभो  
गतोनिवृत्तिभयोहै तातेंतुमस्नानकरे  
महुप्रशादलेऊ तवकहुब्रह्मणपेंडितजोह  
तो सोवावैष्णवब्राह्मणकेपाथनपडे औरक  
हेजो तुसाराधर्मपरमकृतिमहै जोसात्त  
यहुजोग्यहूतो सोस्वप्रद्वारनिवृत्तिभयो  
तववापेंडितब्राह्मणनेकह्यो वैष्णवब्राह्म  
सोंजोग्यधर्मतुमकह्योतेंपायोहै तातेंह

महं को शोवक करो तुम को न के शोवक है  
आप का रवहुत ही वापेंडित ब्राह्मण सोव  
हो जो श्री गुरुकुल में श्री विठ्ठलनाथ जी श्री  
गार्डजी हैं तिनके हम शोवक है इनका वृ  
या सो सब होत है हम तो दास है तब वापें  
डित ब्राह्मण ने क हो जो मो को है शोवक करो  
तब वा ब्राह्मण वैश्व ने क हो जो श्री गुरुगार्डजी  
के शरण जाव तिनके अनुग्रह सो सब म  
नार्थ सिद्ध होयगे तब पंडित ब्राह्मण ने स्नान  
करिकें आपनी नेयम करिकें महाप्रशदली  
यो लाया है श्री गुरुगार्डजी पास जाय के नाम  
समर्पण कायो यामें यह दिखाये जो श्री आचा  
र्यजी महाप्रभु के श्री गुरुगार्डजी के चरणारवि  
न्द को आश्रय जो रखत है तिनको कालादि  
क जो महासर्प है सोई न को भक्षण नाही क  
र सकत है सो कहते हैं जो भगवदस्वरूप  
जो अमृत है सो अष्टप्रहर पानही करत है  
तात्ते कालादिक जो रमण जन्म के दुःख सुख  
को भोग नाही करत है सो कहते हैं जो एकदा

एहं श्रीगुरुजीचरणविंदको अश्रय हो  
उत्तनाही है ताहुतें जिनकों कलादिक वा  
धकना होकरत है ऐसी श्रीआचार्यजी महा  
प्रभुनके चरण एक लहे या प्रकार स्फुरत कृष्ण  
प्रेमामृत सो श्रीगुरुसाईजी आपकृत तिनकी  
टीका भाषा में कीयो है अवयव ग्रंथ को कल  
कहुत है सो एक श्लोक करिके श्लोक मयी  
चेदस्ति विश्वासः श्रीगोपीजनवल्लभो तदा  
कृतार्थं पूर्यं हि सोचनीयं न कर्हि चित् ॥ २ ॥  
याको अर्थ जो एक विश्वास श्रीगोपीजनव  
ल्लभ हो को रखत है सो कृतार्थ रूप हो है  
सो कहते जो श्रीगोपीजनकेवल्लभ श्रीगो  
वर्द्धनानाथजी है तिनके चरण एक मल को  
जब दृढ विश्वास जीवकों भयो तब याको क  
ृतार्थ में संदेह कहर हो है कृतार्थ रूप हो है  
सो अपने उद्धार को चिंता तिनको करणी ना  
हो सो कहते जो श्रीगुरुजी को स्मरण भ  
जनकरत रहनो सो श्रीगुरुजी सर्वसा  
मर्थ हो प्रकृत है सबके हृदय के अंतःकरण

की जानते हैं ताते श्री गुरुजी से आपनी  
कछुव सुकी वांछना न करनी सो कहते  
जो लो किक में काहू की चा करी करीये तो व  
हु चा कर चीर नाहु हो च तो श्री गुरुजी तो  
परम कृपाल हैं आप ही कृपा करिकें परम फ  
ल को देहि जें ता विश्वास करिकों श्री गुरुजी  
को स्मरण न जन करनी सो कहते जे विश्वा  
स वैश्व को हृदय में राखे जो जहां चाई विश्वास  
जीव को न होय तह चाई की ई कृपा करो परं  
तु कछु फल की सिद्ध नाहु हो ऐ कहते जो चात  
क को विश्वास एक स्वात्तिकी जल को दे और  
सो जल के आश्रम में रहता है परंतु पावत  
नाही तिन को यह स्वभाव है कहते जे जो  
लया को जीवन है ताही ते जल है सो मीन की  
रक्षा करत हैं तासे आपनो जीवन जानिके  
श्री गुरुजी की सेवा स्मरण करणे  
भूल नो नाही ताको नाम दू विश्वास  
विश्वास दू राखे तो जैसे लाह के गह  
ते कृपा करिकें रक्षा कानी विष के लडु

में तो रक्षा की नी ही और दुर्वासा को आप तो रक्षा  
कानी है जो नाना प्रकार के विधन श्री गुरुजी  
ने दुर्ग की ये सो कहा है तो जो पांडवन को दृढ़ वि  
श्वास है श्री गुरुजी आपके से रहें ताते दु  
र्ग विधन को सर्व सनाश भयो ताते जा क्रिया में  
विश्वास ना ही सो सब अमही जाननो तह  
कछु ही फल की सिद्ध ना ही है और विदुर  
जी को दृढ़ विश्वास जा निके वधू के का भा  
जी और जना की रोटी अरोगे और श्री भाग  
वत में श्री भुक्त देव जी ने राजा परित्तित प्रति  
कहे हैं जो रह गए राजा को दुदय में  
संभयो है तब सुख पाल ऊपर वे के  
ल मुनी श्वर पास जान मुनि वे को च  
हुं जड भरथ जी खेत ऊपर चढ़े श्री गुरुजी  
को स्मरण दुदय में करत है श्री गुरुजी  
के मनुष्य ने आपके इन को दृढ़ विश्वास  
ल में लगाय परंतु ये भगवद यक  
न ही भगवद ईश्वर मानिके मन में लपके  
है ता पाछे वसे नव भगवत् श्री गुरुजी

चायकें पगधरते सो कहते जो भगवदी  
यावत हैं ताते सुखपाल हलै बहुत हैं त  
वराजारहगएने कछो जो सुखपाल को  
लत है तव और कहुरनने कहु जो एक न  
यो कहुरहुलावत है तव राजा जडनरथ जी  
सोक्यो जो देखत में तो तं मोटो ता जो है ओ  
र अवहु बहुत पंथ ही नाहु आयो और मा  
रग कचोनी चोना हो है तं जो टे टोटे छे च  
लत है सो मो सो त डरत नाहु है और म  
रिवे को हं डरत नाहु है जो पाप्रकर सो रा  
जा जडनरथ कछो तव ज डनरथ एक  
वर सुनिकें उप होय रहे तव राजा बो ल्यो  
जो मेहं उत्तर नाहु पायो तव जडनरथ जी  
दूदे में विचारे जो यह राजा जान सुनिवे को  
च ल्यो है जो या के हृदय में धड़ आश्रय है  
यह राजा सी है ताते या सो बो ल्यो चाहिये त  
व जडनरथ जी राजा के और कृपा करिकें  
देखिकें मंद मंद हास्य करिकें बोलै जो तुम  
कहे जावहु त मो जो है सो तो काहु को शरीर

सुलहोयकाहकोसत्तमहोयहै ओश्रीप्रभु  
जीकोअंशजोचैतन्यहै सोएकरसहैजो  
हृथीमें सोईचीटापैयत्तमेंवरावरहै और  
तुमनेकह्योजोवहुतपंथहंनहीचुल्या सो  
ईहुजीवजवत्तश्रीप्रभुजीतेंविछूरेयाहै परंतु  
अवहंहारमानिकेवेढिकें श्रीप्रभुनकोसुम  
रणनहीकरतहै औरतुमनेकहेजोमार्ग  
सोधोहै सोहेराजाश्रीप्रभुजीकोमार्गहैसो  
तोसुधोहोहै यहअविद्याकेकरिकेभूल  
गयोहै सोढेढेमार्गमेंपरेहैं जोयात्तेरंक  
हाकहेगो औरजोतुमकहेजोमोत्तेनाहीउ  
रत्तरहै सोतोमांटाकेढेलतुंदाहै औरमा  
टाकेढेलयेहुइ कहारहंमांटाकेढलहै जे  
सैंकाठकीएत्तराकोनचावैताप्रकारनावैते  
सैंहंश्रीठकुरजीकोयाकोयाप्रकारनचावत  
है जोयामेंडरुकां औरतुंकाह्योजोमरिवे  
हुकेडरुनाहीहैं सोहेराजायसैंसारमें  
वकोटिवारमरतहै औरजीवतहै ज



रखा दुःख नाना प्रकार के पावत हैं परंतु  
तेही मरिचे को ज्ञान प्रगट भयो जब जड भ  
रथजी ने कसो सब राजा रह गये को ज्ञान  
प्रगट भयो सो पालक कि पर ते कु दिके ज  
ड भ रथजी के चरण कमल ऊपर चीन ती  
करा जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो  
तुम तो भगवदीय है मेरो मन तुम्हारी वा  
नी सुनिके मेरो दुदय के ज्ञान ने चहुँ सो स  
कन लायो ताते मो को ज्ञान सुनायो जो ते  
में श्री प्रभुजी को पांशु ता पाछे राजा जड भ र  
थजी ज्ञान सुनायो ताते सदहु दुख तो सारा  
ज को सब दुख भयो ताते जाके दुदय के मे  
श्री प्रभुन के मिलन की चाहना होइ जहुँ दृढ  
विश्वास भयो ताते फल का प्राप्त भई है सो  
दृढ विश्वास श्री आचार्यजी मह प्रभुन के  
चरण कमल में दृढ को प्रकार होय ताके ली  
ये श्री गलाईजी आपसु रह सकु भ प्रेमानु  
स ग्रंथ श्री आचार्यजी मह प्रभुन की जामे

स्वरूपप्रकट है ऐसी ग्रंथ श्रीगुणाईजी प्र  
गटकीये हैं ताते सब आश्रय छोड़के एक  
श्रीवल्लभाधीशको स्मरण करिके याये ध  
को पाठ करे जौ वैभव मन पूर्वक करे तो  
श्रीआचार्यजी माहु प्रभु के चरण कमल में द  
विधास आवे और वैभव को हृदय अहोय  
जितने कल्याण प्रय होय हैं सो सब आप ही ते  
हरि होय जायः विनाशमह और जितने शं  
तराय होय सो प्रतिबंध सब हरि होय जाई स  
व श्रीगुरुजी कालीला जो नाना प्रकार की है  
बाललील गोचारणलीला दानलीला गोवर्द्ध  
नलीला ब्रजभक्तनकीरता करी सोलीला  
रासादिक सब श्रुत भौव होय और गोपी  
जत वल्लभ भयो है श्रीपूर्ण पुरुषोत्तम स्तिन  
के चरण रविंद में परम प्रेम जो है श्रीपूर्ण  
पुरुषोत्तम को सो सगरो प्राप्न होई और श  
व श्रीहरिरायजी कहत है जो मैं यह स्फुर  
दक्ष प्रेमा मृत्त गंधकी टीका कायो हो।

किं रण करिकै नृषित नई है ॥ प्रियवल  
 नका श्रीरु कुरे जी को प्राण प्रिया को मुद्रि।  
 का सो नख के किरण भूषित शोभित नई  
 है ॥ ६६ ॥ श्लोक विविध महामणि जटि।  
 ताः कनक मयामुद्रिका स्तदंगुली पु। द  
 शसु नखोदित दीधिति नृपा सुविरेजुरे  
 एता ॥ ६५ ॥ अर्थ आति भाति के महाम  
 णि जटित सुवर्ण की नी हैं मुद्रिका ॥ तिन  
 का में अंगुली न विखें और नख तें उदित  
 कहे ॥ प्रकट भई जो दीधितिकहे ॥ ते कि  
 रण आंत्य तानख के किरन नही भए हैं  
 आभूषण उह मुद्रिका के ॥ ता करिकें च  
 भियतु हैं ॥ एणही मृगनयनी संबोध  
 न है ॥ ६५ ॥ श्लोक नैमो वा द्रवत विषल तो  
 प्रेम पायूष एणै नो वा तस्या मृदु करत  
 ले कि तु पंके रूहे त ॥ नाप्यंगुल्यः सखि  
 सममिमाः श्रेण्यस्त दलानामे नेचंचन  
 खरमणयः किञ्च ते षो प्रभैव ॥ ६६ ॥ अ  
 यदृश्रीचंद्रावली जलका वाहन होया तर्क

है ते हर्ष करि कै कहत है ॥ यह विषलता है  
विषलता को कहै ॥ जो कमल के नाल के बीच  
को मल तनु होत है ॥ सो प्रेम रूपी जो अमृतता  
करि कै एह है ॥ अथ वा चाहै ॥ तिन को  
मल हथेली न होय तो कहै ॥ ते कमल की  
दल की है

जो पण्डित कुसुमायुध वा एराज पकरु नन  
खसम एकांति भाजः ॥ किन्तु द्रिया लिर तिय  
द्विविधो जयाय कामार्पिता सुमुखि शतशि  
लीमुखी याः ॥ ६७ ॥ अथ यह हेसो उन के हा  
थ न होय ॥ यह हेसो कुसुम आयुध को जो कं  
दर्प वा एराज त हे वा एन में ते अहै ॥ जो क  
मल पुष्प और यह नख के मणिकांति  
को शोभा न होय तो कहै ॥ प्यारी सखी र  
तिय हज्जीत वे को है ॥ सुमुखी ती दण्डि।  
लीमुखी अथ भाग कुंकंदर्प ने वा ए के अ

तीतएहै एक मया ते कीया हुआ है  
थरा गति रियं चरण नारा एक स्य कथ  
नकर स्यादृश्यते तिसुभोतिन का सांसे  
शयः सखिव भूवतः ॥ ६॥ अर्थ मंथर  
हलुये गति जो ये हरि एक ॥ ७॥ अर्थ मंथर  
डिहं के सांसे सुंदर नारा तत्पंत सुंदर है जो  
दखियतुं होया करि के हे सखी का ह को तिन  
कर जो जंघाता में संशय न होत भयो ॥ ८॥  
जो ककदली कांड विनिर्मित हि डोला स्तंभ  
गम मे वैतत ॥ कुसुमाधस्य मनो तस्या तो  
हयं सरयः ॥ ९॥ अर्थ के ले की डांडी के  
आपत न को ऊपर तें छील के निर्म डंडा मु  
की निर्मित समारे ही डोला के दो उस्तंभ  
है ॥ ते निश्चय है ॥ हे सखी यह हे हो मे  
को कंदर्प काम ही में मानत हं ॥ ये दो  
घान होय ॥ १०॥ अर्थ लोक तस्याः सानंद जो वि  
मान साया मृगी दुःख ॥ मन्ये रति गृह स्तंभ  
यं जानु द्वयं नतत ॥ ११॥ अर्थ ता के अ  
वहित जो गोविंद श्री कृष्ण चंद्र के मन वे  
बंद के नृनिर्मित है हे मृग नयनी में मान  
जोरति कंदर्प का स्त्री ॥ तारति के मंदि  
ए दो उस्तंभ है ॥ मदन सदन के ए दो  
ए दो उस्तंभ है ॥ मदन सदन के ए दो

रहके नाचे ताकों कहियुतह ॥ ७० ॥ श्रीकवि  
विध नूपुर सिंजित मोहित त्रिदशनाथ वध  
वर मानस ॥ स्फुरत लक्त करंजित मंगुली  
षष्ठि शुभे शुभे चरणद्वय ॥ ७१ ॥ अथ भा  
ति नाति सुं पुरु के नाद करि कै मोहे ॥ त्रिदश  
नाथ वध जो ईंद्र वध जो ईंद्राणी में श्रेष्ठ  
दृगणी के अंतःकरण और महावर करि  
कै रंगे हैं दोरु चरण रविंद ॥ और वा सो  
गुली हं सो देदिप्य मान हं महावर सुंदर से  
अ गुली ॥ और सुंदर चरण रविंद रंगे हैं ॥  
श्रीकवि स्मित लल लव लज्जित रतिपति  
न चरण सरसि अग्र एतौ ॥ प्रतिविंवितारु  
दीया श्रवण विंदाल यो न नखा ॥ ७२ ॥ अथ  
श्रीवज्र लक्ष्मी के मंद हास्य को जो लेशमात्र  
ना करि कै ॥ अथ वा मंद हास्य की लेशमात्र  
आ करि कै लज्जा को प्राप्ति न हो ॥ लज्जा है सो कं  
दपे सो लज्जा य करि कै ॥ श्रीचंद्र वलीज के चर  
ण कमल करि कै दंड वृत्त कीयो है ॥ लवह  
सो कंदपे के लीला को जो चंदन चांदलो विंदु  
का सो प्रतिविंवकापुंक्ति के प्रतिविंव है न  
खन होय ॥ ७३ ॥ श्रीकवि तस्याः कृष्णं दुःखं गंहर  
अजन दशाभावि नं भावयित्वा तद्योग्यत्वा  
र्णमें नलि शिरतर मये कवंता पाद युग्मं सा

एजीवने ताके प्रभा को जो मद ता करि के  
च हो मानै है दुनहुन को ॥ आली देव  
को और ब्रह्मादि कन को है अवगगण  
मा रुख करि के ग एत है ॥ चंचल जो है न  
प्रता करि के कौन है जो मोह को पा प्रन होय  
७६ ॥ श्लोक सखा शत च तंचल दल यं  
कैं किं एी नृ पुराद्या मंद कल्ले खि जि तां  
चेत मनो जग त्या वने ॥ वयस्य सहितो व  
ताधि पसु ता वृजं ती पुरो द दर्श सखि सुं  
रा मन ति दूर त स्ता म ना कु ७७ ॥  
व श्री चंद्रावली जी अ संख्या त सखा सो  
हित होय चलं त है ॥ कैसे है जो चंचल हो  
त है ॥ चू डो कं क ए किं क एी त द दं टिका ओ  
र धं ध रु ता करि के व दू त है ॥ अल्प क्रम धु  
र श व्याय मान जा नो मनो ज जो चा प ल्य  
ग त्य ता की ए जा कर त है ॥ यां प्र कर करि  
कै व न वि खें चल त है ॥ त व ऊ हां सखा स  
हित श्री विज राज जी के सुत पुत्र ऊ ह सुं  
दरी न को जा त दे खे ॥ पुरो क ह त है ॥ सखा  
४ अति दूर थो डे एक दूर ते तिन की श्री रा कु  
र ना ने दे ख त त सि करि के ने क ही दे खी है

॥ १ ॥ च किं तन्नयनं दृष्ट्वा तदा न नृपकज  
 नस्य मशकादातुं दृष्टि मन्ना गपि माधव  
 निजस्य हचरी शंकालज्जावधानमपि  
 विजप्रियसखित्तदानाभूत्तस्य प्रियाह  
 तचेत्तसः ॥ १०८ ॥ श्रीचंद्रावलीजको  
 मुखकमलसचकितदृष्टनेत्रकरिकेदे  
 खत्तदेखत्तनेत्रकोकधूथो डोसो फेरला  
 वने कौनीका प्रकारसहितनाहं है ॥ श्री  
 ठाकुरकौशंतः करण चित्तसहितसवध  
 प्रियाजने हरलीनो है ॥ १०९ ॥ श्रीकचंद्र  
 दत्तासहासोक्तिजलपरिमलानिलः ॥ त  
 त्संगमद्वयगेषु संगतः पुलकव्यधार  
 ॥ ११० ॥ श्रीचंद्रावलीजने हरली  
 नो है ॥ हाससहितहासदुक्किकही तात्ते  
 मुखकमलवेचोवत्त है ॥ सुगंधपरिमल  
 वायु है ॥ तव श्री ठाकुरजी किं अपने श्रीगति  
 त्वं तिनके संगमनाहं है ॥ रोमांचितभये  
 लात्त्विक आविर्भावभयो है ॥ १११ ॥ श्रीक  
 थमस्याननुसंगमो नवेत्कथं वा त्रसह च  
 रीजातः ॥ ५ ॥ तिचिंतय नृपायं ज्ञात्वा हरि



होगा पालान् ॥ १० ॥ अथ कथं करि कै  
निश्चय यासों संगम होय ॥ अथ वा कों क  
कैं ई हां सखा जाने तै सैं या प्रकर विचा  
करि कै ॥ ता को उपाय को इति चित्ता क  
कैं उपाय जान करि कै श्री गुरु जी गोपा  
न को कहतु भये है ॥ १० ॥ श्लोक गोपी गोर  
न विक्रियार्थ मखिला गच्छेत्पटत्ता चित्तं  
गदानंतदिहानयध्वमचिरान्मलं निधौ  
पिका मा जातु स्यु शतौक्तिभिः परिमि  
मावा च्छां देति स्वा मिनी प्रोक्ता स्निष्टततिष्टते  
निश्चय वचनास्नेत्रा गमत्सत्वरं ॥ १० ॥ अथ  
सख गोपिका गोर सख वच के अर्थ निश्चय क  
रि कै जात है ॥ मेरे गनी धान से गोपिका स  
वदन बिन दये जात है ॥ मत जावर होर से  
काहुं जाव थहु वचन करि कै बालक सख स्था  
मिनी जी प्रतिक हत है ॥ गोपी पास रहं वेग  
आये है ॥ १० ॥ श्लोक तत्र काचिदुवाचैतान्  
किमेरे गोप दारिकाः ॥ अकारयति वीरं नंदनं  
एनो गो कुलाधिप ॥ १० ॥ अर्थ तह को गो  
पांग भात गोप बालक प्रत्य बोली जो ॥ कहै  
गोप दार का अनादर करि कै तम बुला

॥ १ ॥ तुम श्रीनंदरायजी गोकुल के अधिपति  
के चटा काहे को बुलावत हो ॥ २ ॥ श्लोक क  
थ मे वं वयं किं वा दास्य स्तस्य कुलांगनाः  
यात्त प्रतिष्ठया स्माकं नत्त वं यन्निषिका  
॥ ३ ॥ श्री कही करि के या पुकार करि  
हम को बुलावत हो कुलांगना कहे सो हम  
कहा नंदराय कुमार की लौंडा है जा का प्र  
तिष्ठा सो हम को तुमने जो यह निषिका  
कहे ते जो डर दिखावत हो सो हम तुम्हारे  
डर सो ये ते डर वे वारे न होय ॥ ३ ॥ श्लोक न  
वयं स्वत एव किंचिदुच्चैः कुलयोषित्सु सस  
हसा वदमः ॥ व्रजनाथ वचः परं विधेयं तु  
धिताः किन्तु गच्छत स्वगेहं ॥ ४ ॥ श्री वा  
लक गोप के कहत है जो न कहू हम आप  
ही ते कहू रुंचे करि कुलवध विषे लाहय  
लो क थो है ॥ ये व्रजनाथ वचन का थो है गो  
पिका प्रतिकहत है गोप ॥ किन्तु जाव अपूर्  
को ॥ ४ ॥ श्लोक माया नंदराय पथो व्रजना  
था जं विनावनेन स्य ॥ वृंदा स्त्री तदिपिनं कु  
तस्तदयं परं न स्यात् ॥ ५ ॥ श्री अववा ल  
क कहत है जो तुम को श्रीनंदरायजी को मोह

जनाथ राकुरजीतिनका। आशा  
तिनके वचन विले मत्त आओ। पूर्व  
प्रो उत्तराई नक्तन के वचन यह जो वृंदा  
तनको वचन है। तुम्हारे वचन कहें। ते आ  
प्राय वचन तो हमारे हैं। सो कहें ते जो आ  
हैं। तुम्हारे हैं। और हम कहें। नाते हमारे  
हैं। ॥ ८ ॥ श्लोक वक्तृमा वन वदाचि दृश्यते  
न त्वलौकिकं। वक्तिमा किल शरत्स्य धर्म  
स्तस्य दृशंग्रहः। ॥ ९ ॥ अथ फिर वालक  
कहते हैं। तुम्हारे वचन हैं। सो देखें कुटिल हैं।  
देखियत है। ये निश्चय तलौ किक देखिय  
तुम्हें ऐसे हम कहें देख्यो नाहीं। उत्तराई न  
क्तन के वचन कुटिल तो निश्चय कहिय वचन  
शरमे होत है। कुटिलता धर्म है। तो तिन व  
नेत्रन में अह एक रि कै कहियत है। ॥ ८ ॥  
श्लो न्यायेपि पठितः किंतु न वत्पाति विद  
या। किम न्यायं पाठयितुं मधुना त्वं समा  
॥ ९ ॥ अथ अथ पूर्व वालक के वचन  
तुम जो यह कहते हो। जो कुटिलता क  
शरमे ग्रहण करिय तो कहाँ तुम  
नक्तन के वचन

॥ २॥ तुम श्रीनंदरायजी गोकुल के अधिपति  
के चेटा काहे को बुलावत है ॥ १॥ ॥ श्लोक ॥  
थमेवं वयं किंवा दास्य स्तस्य कुलांगनाः  
यात्प्रतिष्ठायास्माकं नत्तवेयं विनीषिका  
॥ ८३ ॥ अर्थ कहै कहै के या पुकार करि  
हम को बुलावत है कुलांगना कहै सो हम  
कहै नंदराय कुमार की लौंडी है जाका प्र  
तिष्ठा सो हम को तुमने जो यह विनीषिका  
कहै ते जो डर दिखावत है सो हम तुम्हारे  
डर को ये ते डर वै वारे न होय ॥ ८३ ॥ श्लोक ॥  
वयं स्त एव किंचिदुच्चैः कुलयोषित्सु स  
हस्रावयमः ॥ व्रजनाथ वचः परं विधेयं ह  
धिताः किं नु गच्छत स्वगेहं ॥ ८४ ॥ अर्थ व  
लक गोप के कहत है जो न कहै हम आप  
ही ते कछु ऊंचे करि कुल वर्ध विषे साहस  
यो कथो है ॥ ये व्रजनाथ वचन कायो है गो  
पिका प्रतिकहत है गोप ॥ किंतु जाव अपहर  
को ॥ ८४ ॥ श्लोक ॥ माया नंदराय पथो व्रजना  
थाज्ञा विनावनेन स्या ॥ चंद्रास्त्री तदिपिनं कु  
तस्तदयं परं न स्यात् ॥ ८५ ॥ अर्थ अब बाल  
क कहै जो तुम को श्रीनंदरायजी को सोह

अनाथ दत्तकजीतिनकी आज्ञावि  
तिनके वचनविषे मत आओ। ए पूर्वहिं  
प्रो उन्नराई नक्तनके वचन यह जो वृंदा स्त्री  
तेनको वचन है। तुम्हारे वन कहते आ  
या यह वन तो हमारे है। सो कहते जो ऊ  
रुंदा स्त्री है। और हम कहते हैं। ताते हमारे  
हैं। ॥ ८ ॥ ॥ श्लोक वक्रमावन्न वदाचिदृश्यते  
न त्वलौकिकं ॥ वक्रिमा किल शब्दस्य धर्म  
स्तस्य दृशंग्रहः ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ अव फेर वालक  
कहते हैं। तुम्हारे वचन है सो टेढ़े कुटिल हा हैं  
देखियतु है। ये निश्चय जालौकिक देखिय  
तु है। ऐसे हम कहते देख्यो नाहीं। उन्नराई न  
के वचन कुटिलता निश्चय कह्यो वचन  
धर्म में होत है। कुटिलता धर्म है। तो तिनके  
वचन में अहण करिकें कहियतु है। ॥ ८ ॥  
सो न्यायोपि पठितः किंतु न वत्पाति विदग्ध  
या किमन्यायं पाठयितुं मधुना त्वं समागतः  
॥ ८ ॥ ॥ अर्थ अव पूर्वाह्न वालक के वचन यह  
तुम जो यह कहते हो। जो कुटिलता क  
शर्म में ग्रहण करिय तो कहें तुम न्या

॥ तुम श्रीनंदरायजी गोकुलकेशधिपति  
के चेरा कहें को बुलावत हो ॥ २॥ श्लोक क  
थमे वं वयं किं वा दास्य स्तस्य कुलांगनाः  
यात प्रतिष्ठया स्माकं नत्त वेयं विनापिका  
॥ ८३ ॥ अर्थ कहै करि कें या प्रकार करि  
हम को बुलावत हो कुलांगना कहै सो हम  
कहै नंदराय कुमार की लौंडी है जाका प्र  
तिष्ठा सो हम को तुमने जो यह विनापिका  
कहै ते जो डर दिखावत हो सो हम तुम्हारे  
डर सो ये ते डर वे वारे न होय ॥ ८३ ॥ श्लोक न  
वयं स्वत एव किंचिदुच्चैः कुलयोषित्युससा  
हसा वदामः ॥ व्रजनाथ वचः परं विधेयं लु  
धिताः किन्तु गच्छत स्वगेहं ॥ ८४ ॥ अर्थ वा  
लक गोप के कहत है जो न कहै हम आप  
ही ते कहै उंचे करि कुलवध विधे साहस  
सो कथ्यो है ॥ ये व्रजनाथ वचन कथ्यो है गो  
पिका प्रति कहत है गोप ॥ किंतु जाव अपघ्नर  
को ॥ ८४ ॥ श्लोक माया न नंदराय पथो व्रजना  
था जं विनावने न स्या ॥ दंडास्त्री तदिपिनं कु  
तस्तदयं परं न स्यात् ॥ ८५ ॥ अर्थ अववा ल  
क कहै तो हम को श्रीनंदरायजी को सो द

अनाथ जो श्री गुरु जी तन का आराम  
॥ तिन के वचन विले मर आओ। ऐ पूर्व है  
॥ उत्तराई न कन के वचन यह जो वृंदा स्त्री  
तेन को वचन है। तुम्हारे वन कहंते आ  
या यह वन तो हमारे है। सो कहेंते जो ऊ  
गंइ स्त्री है। और हम हूँ। नाते हमारे  
है। ॥ ८५ ॥ श्लोक वक्रमावने वहा चिदृश्यते  
न त्वलौकिकं। वक्रिमा किल शरुस्य धर्म  
स्य दृशंग्रहः। श्रुथ अव फेर वालक  
कहत है। तुम्हारे वचन है सो टेढ़े कुटिल हाँ  
देखियत है। ये निश्चय अलौकिक देखिय  
तुँह ऐसे हम कवहं देख्यो नाहीं। उत्तराई न  
कन के वचन कुटिलता निश्चय कह्यो वचन  
शरु में होत है कुटिलता धर्म है। सो तिन के  
नेत्र न में अहण करिकें कहियत है। ॥ ८६ ॥  
श्लोक न्यायोपि पठितः किंतु न वत्पाति विदग्ध  
या किमन्यायं पाठयितुं मधुना त्वं समागतः  
॥ ८७ ॥ श्रुथ अव पूर्वाह्न वालक के वचन यह  
तुम जो यह कहत है। जो कुटिलता कहं  
शरु में ग्रहण करिये तो कहं तुम न्याय श

५४२  
२६

अन्यायपटावनकोत्तुमत्रावश्यायेहो॥५॥  
श्लो॥ कतावहिलं वप्रसहिधुरमंरमंचर  
काचीकलापकलसंजितमजुगत्यागेव  
ईनाद्विशिरशश्चपलोत्तरीयश्चंद्रवल  
निकटमाग्रमटं वजाह॥६॥ अर्थय  
हसर्ववचनगोपवालकहे॥ भक्ततरट  
येतहांताई विलंवश्रीरकरजातेसथे  
नगयो॥ वहुतजोहोयविलंवतेसेअचे  
कहेंकहा॥ कंचाजोकटिमेश्वलासद्रध  
काकोशरुकरिकेंजो अव्यक्तमधुरश  
करतोसुंदरगतिचालकरिकों॥ श्रीगोवह  
नपर्वतकेशिवरतों॥ सोरुपुरतेदोरिवे  
उत्तरेचपलचंचलहोतज्या॥ ओरउत्तरीय  
उत्तरएगवस्त्रसहितयाप्रकारश्रीचंद्रव  
लीजकेनिकटअं वजाहश्रीकुलमचंद्रमे  
आवतअयेहै॥७॥ श्लो॥ मनोवचोओच  
रलोचानांतसौंदर्यलेशंसुविचित्रवेषा॥  
स्मितप्रियानंगविमोहनसाददर्शगो  
पेंडकुमारमाशर॥८॥ अर्थ॥ मनुओर  
वचनतोगोचरजाकेमननेमनने



विक्रिष्टे को सामर्थ्य नाहीं ॥ कह्यो  
कनेत्र अंचर प्रांत भाग के अंत एक को  
का सौं दर्यता एक लेश मात्र हूं मन को  
और वचन को गोचर है ॥ एतादृश श्रीसं  
रज को श्रीचंद्रावली अर्चि राजा जी के  
हमारि को अपने निकट हो ॥ देखत लो  
जात ॥ शोभावन सुधानिधि सुखमाज  
त धिनि मया दृशं कुरंग गद्दी ॥ नाशक दु  
हृत्तु यत्स है व सहस्रामनोप्यासीत है ॥  
अर्थ जो श्रीगुरु जी को मुख कै सो है सुधा  
निधि चंद्रमा है ॥ और शोभा को तो समुद्र  
हो ॥ ताविखें कुरंग गद्दी श्रीचंद्रावली जी के  
नेत्र दृष्टि उवत भई ॥ तिका सबे को साम  
र्थ्य नाहीं ॥ नैक सख कत नाहीं हैं ॥ जातें द  
ष्टि का साथ एका येक मन डूबे यो है ॥  
शोक अपांग विभ्रमौ तुंग स्तरंगे स्तम्भो  
दशो ॥ अगाधे पातिते द्यास्ता मश के व हि  
रगतो ॥ ५२ ॥ अर्थ श्रीगुरु जी के कट दों  
जो विलासना करान विलास को जो कत

अन्यायपरावनकोलमअवआयेहा॥७॥  
सावद्विलंबप्रसहिधुरमंदमेचर  
काचीकलापकलसंजितमजुगत्यागेव  
हैनाद्विशिरशश्रुपलोचरीयश्रुदुवली  
निकटमाग्रमटंजुजात॥८॥अर्थय  
हसर्ववचनगोपवालकहेभक्तकृतरटी  
येतहांताईविलंबश्रीगुरुजीतेंसद्यो  
नगयोबहुतजोहोयविलंबतेसेअचत  
कहेकहाकंचाजोकटिमेखलातद्रुघो  
काकोशरुकरिकेंजोअव्यक्तमधुरशब्द  
करतसुंदरगतिचालकरिकोंश्रीगोवर्ध  
नपर्वतकेशिखरतेंसोऊपरतेदोरिके  
उत्तरेचंपलचंचलहोतेज्याओरउत्तराय  
उपरएगवस्त्रसहितयाप्रकारश्रीचंपूव  
लीजकेनिकटअंजुजातश्रीकुलमचंद्रो  
आवतअर्थहै॥९॥श्रीमनोवचोओच  
रलोचानांतसौंदर्यलेशंसुविचित्रवेषा॥  
स्मितश्रियानंगविमोहनंसाददर्शगो  
पेंद्रकुमारमाशर॥१०॥अर्थमनुओर

हे कौं सामर्थ्य नाहीं। केहू जो  
 अचर प्रांत भाग के अंत एक को  
 दियता एक लेश मात्र हूं मन को  
 वन को गोचर है। एतादृश श्रीसं  
 तो श्रीचंद्रावलीजी के  
 को अपने निकट हो हैं देखें तैं  
 श्लोक वदन सुधा निधि सुखमाज  
 न मया दशं कुरंग गता। नाशक दु  
 स्सहै व सहस्र मनोप्यासीत है  
 श्रीरामजी को मुख के सो है सुधा  
 वंद्य मो है। और शोभा के तो समुद्र  
 विखें कुरंग ही श्रीचंद्रावलीजी के  
 छिड़वत भई निकसवें कौं साम  
 ह्य निकसवें कत नाहीं जातें ह  
 साथ एका येक मन डूबे यो है  
 विषंग विभ्रमों छंग स्नेहें स्नेह  
 अगधे पातित हास्ता प्रश

रं रात्रि श्रीराम

८४ कचकोउछलिवोताकेजोअनेकअसंख्या  
तरंगलहरताकरिकेतनमनओरदोऊ  
दृष्टिएतानोअगाधमेडूवेकहतेअववा  
हिरआडवेकोंअशक्तहै॥८५॥ श्लोक॥ मि  
लंवादधिकलशिकामूर्द्धिसंस्थापितोव  
तोमार्गवागमनमथवाकंचुकीमंचल  
वाटिहंवास्वरहमुत्तसखावृंदमेषाम  
गतीघोषाधीशात्मजमपितदानाति  
दमोहितैवा॥८६॥ अर्थ॥ हेसखाअथ  
वावायमेंमोकोंवेणीकाशुद्धनाहीहैओ  
रदधिकलशकीशुद्धनाहीहैअथवामे  
रेमाथेकीशुद्धनाहीहैअथवामार्गपैडे  
काहंसुधिनाहीहैअथवाचलवेकीह  
शुद्धनाहीहैअथवाकंचुकीतथाअंचल  
काहंसुधिनाहीहैअथवाआपनीदेही  
हकीअथवागृहघरहंकीअथवासखा  
नकेयथकीसोऊहोंकहांहोंकानाहीहैं  
यहएजोमृगतीश्रीचंद्रावलजताकों  
कहालोकहंतोघोषाधीशात्मजजो

...ता हकी तो समय न जानत भ  
...हैं। मोहित हो पड़े हैं। ॥ ३॥ शोचत तो  
नृकुलै रिव तत्तरंगै रणों गपा ते विंत्त तै रि  
...जा लै विशालै वचनैः सत स्यात्सं  
वेद सख करे दुदर ॥ ३॥ ...तदनं  
...र श्री गुरुजी ने अनुग्रह की ना डे ता के  
...पों ग के विलास के ऊंचे तरंग ॥ अनुक  
...तरंग करि कै ॥ श्री चंद्रवली जी के हे स  
...श्री गुरुजी ने बड़े वचन करि कै ॥ आ  
...नो उदर जे न्यावत भए है ॥ ३॥ ...  
...स्वास्त दाष्ट एत मेय दासी त्रि चातुर्य धैर्य  
दिक मंत्र युक्ति ॥ नैवास्ति गोविंद पद प्र  
...ता पा नु भाव मात्र ए विनेति मन्ये ॥ ३॥ ...  
...तव श्री चंद्रवली जी के प्राण प्रै एत म जो श्री  
...गुरुजी विखें जो कछु होत भयो ॥ चातुर्य  
...धैर्य दिक के हुत हैं ॥ सर्व थान रहे ॥ यह  
...जो करि कै चातुर्य धैर्य दिक होत भयो है  
...श्री गुरुजी के चरणारविंद के प्रसाप के  
...भवे मात्र के होत भयो है ॥ ३॥  
...मने नंतर लांचलो चने न स्त्रि

२॥ कचकोउछलिवोताकेजोअनेकअसंख्या  
तरंगलहरताकरिकेतनमनओरदोरु  
दृष्टिएतानोअगाधमेडूवेकहतेअववा  
हिरआडवेकोंअशक्तहै॥८॥ शोभमि  
लेवादधिकलशिकोंमूर्धिसंस्थापितोव  
तंमार्गवागमनमथवाकंचुकीमंचल  
वाटहंवास्वरहंमुतसखीबंदमेषा  
गती॥घोषाधीशात्मजमपितदानाति  
दन्मोहितैव॥८॥ अर्थ॥हेसखीअथ  
वावायमेंमोकोंवेणीकाशुद्धनाहीहैओ  
रदधिकलशकीशुद्धनाहीहै॥अथवामे  
रेमाथेकीशुद्धनाहीहै॥अथवामार्गपैडे  
कीहंशुधिनहीहै॥अथवाचलवेकीहं  
शुद्धनाहीहै॥अथवाकंचुकीतथाअंचल  
कीहंसुधिनहीहै॥अथवाआपनीदेही  
हकीअथवागृहघरहंकीअथवासखी  
नकेयथकासोऊहोंकहांहोंकानाहीहैं  
यहुएजोमृगती॥श्रीचंद्रवलजताकों  
कहालोकेंद्रं॥तोघोषाधीशात्मजो

श्रीगुरुजी ताहं को तासमयं न जानत भ  
वैहो मोहित होय गर्दहो ॥ १ ॥ श्रोत तो  
नुकूलै रिवत्तरंगै रंग पातै रित्तै र  
गाना जालै विशालै रचनैः सत स्या स्वसं  
वेद सख करो दुदर ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते  
श्रीगुरुजीने अनुग्रह की नाई ताके  
पांग के विलास के कुंचे तरंग ॥ ३ ॥ नृक  
तरंग करिकें श्रीचंद्रवलीज के हे स  
श्रीगुरुजीने वडे वचन करिकें ॥ ४ ॥  
नोउदर जेना वत भएहो ॥ ५ ॥ श्रोत  
साख दाश्रय तमेय दासी तंचातुर्य धैर्य  
दिक मंत्र युक्ति ॥ ६ ॥ नैवास्ति गोविंद पदप्र  
तापा नुभाव मात्र एविनेति मन्यो ॥ ७ ॥  
तव श्रीचंद्रवलीज के प्राण प्रपन्न मज्जे  
गुरुजी विखें जो कछु होत भयो ॥ ८ ॥  
धैर्य दिक के हत हैं सर्व थान ॥ ९ ॥  
जो करिकें चातुर्य धैर्य दिक देल ॥ १० ॥  
सो श्रीगुरुजी के चरणारविंद के प्र  
भुभव मात्र के होत भयो ॥ ११ ॥

एनदर हासरुचासुगत्पाकिवर्णिनेन  
वदुनासखियेशलेस्वेः संमोहतांरसि  
कतानिधिरहनाथः॥८॥ श्रीगो  
कुरजीजोहैमोगर्वयुक्तआननकरिकें  
आरचननेत्रकेअवलोकनकरिकें  
आस्नेहसंयुक्तसचिष्कण्डताएचिने  
वोकरिकेंदरहासकहृतहैंसुंदरप्रव  
रहास्यसुंदरहैअपनीचालकरिकेंपधा  
हैंसखीताकरिकेंमैअववदुतहैंवटि  
नकहालौकरहैंहैसखीआपनीजोयेश  
लतासौंदर्यतातेमोहितकरिकेंपधारे  
हैंआररसिककेनिधिएसेजोव्रजनाथ  
श्रीकृष्णचंद्रसोकहृतहैं॥८॥ श्रीप्रबोधि  
तेवगेविंदवचनैरापिसुंदरी॥अत्युद्भटददो  
सरणःप्रत्युत्तरमनुत्तर॥८॥ श्रीगोश्रीगो  
विंदसोश्रीकृष्णचंद्रतिनकेवचनकरिकेंप्र  
बोधतकानोहैंसुंदरीनको॥अतिउदमटदी  
अप्रतिरुक्तसखीनको॥सोकछप्रतिउत्तरनआ  
यो॥८॥ श्रीकृष्णकथगछसुंदरत्वैवदानंगोर  
सविअये॥सीजकांचीकलापेननर्ममं



भवतु ॥ अथ अवश्याग कुरुजी आप  
 हुत हैं जो ॥ तुम गोरस विक्रय के दानधि  
 दये कौ जात हैं ॥ कहा कटि मेखला आ  
 आभूषण को शबू करि कै कहु हम को  
 पनी वै भवति खावत है ॥ ५ ॥ लोभ्य द  
 धीति मदीया गतिरपि किं नावलोकितो  
 सुभग ॥ पश्येत्पमिति वदंती पदानिकति  
 चित्मयं त्यक्तलत्त ॥ ६ ॥ आ ॥ हे सुभग सु  
 दर

न संम्यग्वलोकिता गतिरियं त्वदीयाम  
 आमनीडिकं मा गतानि जगति पुनर्दर्श  
 ॥ १ ॥ अहो कुलवधू जननिकटमादुयन्ति  
 नयो भवान् जगत्तिलक्ष्यते विपिनगोच  
 रस्युद्धट ॥ २ ॥ अथ अवश्याग कुरुजी कह  
 हैं जो यह तुम्हारी चाल हमनी की प्रकार ना  
 गिटेखी ॥ थोरे खेह लवे हमारे निकट आय के  
 नरवार दर्शन देव ॥ अहो कुलवधू मैं  
 आवनि भय होय कै तुम स  
 अलक्षित हो काहे विपिनगोच

कहेवन विखे प्रकट यह उद्भटः ॥ रं ॥ श्री अ  
तः परं कुतो भित्तिस्त्वत्सहायवतो मम ॥ स्व  
सहायी करोत्येष मामेवा हो विषयेयः ॥ १०० ॥  
अर्थ श्री गुरुजी कहत हैं जो ता पाछें अ  
वह मारे को हे को डर तुम ही हमारे सहय  
ह ॥ जो तुम ही सहाय का उदेश करोगे हम  
तो बडे ही आश्रय है ॥ यह सो विपरीत  
यो है ॥ १०० ॥ श्री गुरु सखी गोकुल में  
हुं तं वदं नंद रागे ॥ तदुर्मराज्य मार्ग नश्र  
विशेष योग ना धर्म ॥ १०१ ॥ अर्थ अव श्री चंद  
वली ज कहत हैं ॥ जो हैं सखी हो श्री गोकु  
ल विखें जाओ ॥ और ए सब श्री गुरुजी वि  
खें ए ता दशवृत्त सव श्री नंद राय जी आ  
गें कहत हैं ॥ जो तुमारे धर्मराज्य मार्ग वि  
खें कवहुं हमारे श्रवण विषे ना ही भयो है  
अथ श्रुति विखें एक कहत हैं ॥ वेद में ए सो क  
हे ना ही सुन्यो जो कुलंगना विखें ए ता द  
श दार्द करे ॥ १०१ ॥ श्री गुरु किं घ्या जै नै वस  
गृहं गंतुं करे विचार्य ॥ अहमासं ध्ये गो  
प्या गृहम पि यानं नरा मा मि ॥ १०२ ॥ अर्थ

॥ हाकुरजी आप कहत है ॥ जो तुम कह ॥  
 मिस करि के अपने घर जाय वे को चतु  
 र्द करि के कहत है ॥ जो है सो है गोपी हों  
 ध्या पर्यंत तुम को मैं अपने घर जाने न  
 कुं गा ॥ २ ॥ ॥ लोक नवान् पुरुष नृषणः क  
 मुगोपिकात्वं वदत्य होतदपि साविधि  
 वण मंगलं स्वात्मनि ॥ वदुस्त्वमपि ते क  
 वृत्त कुमार लोकोत्तरा विभ्राति नवचारु  
 विजितवादि जात्युत्तरा ॥ ३ ॥

श्लोक

विश्वासमुत्पादयितुं स्त्रियो स्नानं ज्ञात्वा व  
 दत्येवमयं मृगादी विनैवमदाचमये वि  
 शिष्टः स्वासो भवत्या भवती श्रमेण ॥ ४ ॥  
 अर्थः ॥ विज नृक कहत है जो कहत तुम  
 हम को स्त्री क विदित है ॥ ४ ॥

पञ्चावनेकेप्रकारकहतहै॥ मृगद्वय  
कसखीप्रत्येककहतहै॥ जोहमारेवचन  
विनाहोहैंसंबोधनआयो॥ औरस्वामन  
रोआप्रकारअर्थकरिकेंश्रीकुरजीअ  
पकहतहैंविशेषहैं॥ सोआसश्रमकर  
केंतुमकोहोतहैं॥ ४॥ ॥ किंमधिक  
सेकुलागनास्वंगमेदशंवचन॥ सोदे  
शक्ताःपरमिहिकेंकुर्मोनंदराजसुते॥  
अर्थअवविजनेककहतहैं॥ अवतुमह  
मकोलेदुतअधिककहुलोकहेजोकुल  
गनात्वकरिकेएतादृशतुहारेवचन  
हैअशकहोयहमकहंकरेजोअनंद  
रायजेकेवटाहो॥ ५॥ ॥ मकुलेश  
हंगंतुनदसकुलखिय॥ ६॥ ॥ वदने  
गदृशंदनंलगतिमामक॥ ७॥ ॥ अर्थ  
बोधनहै॥ जोकुलेशतुमजोहोसोख  
कोधराजानकोंकौनाहोदत्तहै॥  
कुरजीआपकहुतहै॥ जोश्रीवंदव  
लंमृगतयनीनकोहमारेदानल  
लंमृगतयनीनकोहमारेदानल

लिगत्यहं कुच ॥ चरण शरसिकर  
पीथा दुन्नतदुदात्माकं ॥ ७ ॥ अर्थ यह तो  
हिले हम कवई ना हो सुन्यो निश्चय कि  
॥ ८ ॥ नल गे है सो कहं ॥ पां वन विखे अथ  
वमाथे विखे अथवा हाथ विखे अथवा पी  
विखे सो तो हमे को कहें ॥ ९ ॥ श्लोक ॥  
बले नासिकं चुक्या यद्गोपी च मुरस्तवात्  
स्मिन्निति वदन्वीरः करणस्पृशदुद्धटं ॥ १० ॥  
अर्थ अवशी दा कर जी आप कहें जो कंचु  
री के अंचल करि के जो तुझारे उर स्थल  
वखें ॥ गोप्य चुकि करि के श्रीनंद राय जर के  
बटा है ॥ ता के आगे सो उद्धट उद्धव होय हा  
थ करि के ॥ जो म हा सु भट हा होश सोई न  
रिके ॥ जाके आगे स्पर्श करत नये ॥ ल  
श्लोक कथं कुलवधू जनस्पृशसि हंतमम  
स्थले न भ्रातिमवलं वसे सकल सेतवापु  
तं ताः ॥ सरोजदललोचने सतत मिश्र मे  
वीगना स्पृशामि सखिते कदा वसन मे तु  
रुलं पिता ॥ ११ ॥ अर्थ अव विज भक्त करि  
कै कहत हैं ॥ जो तुम को करि के कुलवधू

जिनके मर्म स्थल विखें स्पर्श करत हों ॥ ५  
रखी है अलव करिवे में  
तव श्री गुरु आप बोले जो हे कमल पदी  
घे लोचना में हं निरंतर या प्रकर ही या हास  
ल में अंगना स्त्री नकों स्पर्श करत हों ॥ सर  
ये तुझारे वस्त्र कम रीपा कव रु लें धी है  
श्लोक वचनो क्रीदि गुणित मुत्त करो पिक  
कराव दत्तः सेतुः त्वद्वचन सह कर्तमत्त  
रणं भवत्य व ॥ १० ॥ अथ अवधि ज्ञान कव  
हत्त है ॥ जो तुझारे वचन उक्ति कहि बोला  
करि कें दि गण मै करत है ॥ अथ श्री गुरु जी  
आप कहत है ॥ जो तुझारे वचन को दोऊ सा  
मर्थे कीये ते जव हमारे और तुझारे वचन  
दोऊ साथ कीये हों ॥ और आपुनै करन कहे  
किया कहिये भाव बोध कव कौ कि ॥ १० ॥  
श्लोक वाक्य चोतरी धुराणं जानी मस्त्वा च नंद  
नृपसूनु ॥ अति दुर्लभ लितं परमिह दानं द  
धि शुं श्रुतं नैवं ॥ ११ ॥ श्लोक वचन चातुरी मे  
धुरीता कहते ता के रितो हम जाने जो तुम  
जो श्री गुरु गायन के पत्र हो ॥ अर्च्य तड



गने॥ इयदवधदस्वत्स्वरूपमित्यहं नाम  
याज्ञातमुत्तमं॥ १६॥ अथ जीवबालकयाप्र  
कारकहो॥ तव श्रीरुक्मिणी आपकहृत्तह  
जो हेवत्तभांगने॥ तुम तो श्रीरुद्रावनवि  
वेचिवे जाज्ञहों॥ और पासय मुना जलवि  
सिंतुल्लारे स्थिति है॥ अथ वा तुम एसी के  
कहत है॥ हेवत्तभांगने॥ जो या करि कै खे  
करि कै कहत है॥ जो यह है॥ हाय हाय हा  
एलो उत्तमतु द्वारे स्वरूप अवलो ह मन ज  
न्या॥ १७॥ श्रीक व्याजः परं सुंदरी गोरस्य क  
तो स्त्वमुत्तं किमया हवत्स्व उरस्थले  
स्थाप्य नयस्य लक्ष्यं मदन्यपुंसो ननु तन्म  
व॥ १८॥ अर्थ॥ श्रीरुक्मिणी आपकहृत्तह  
जो सुंदरी यह तो गोरस के मेष मात्र की  
यो है॥ सो तो कायो॥ या को मोल्य कह करे  
कहं या वस्तु को मोल का मोल का यो है॥  
मउर स्थल विखे स्थापन करि कै टाक के  
कैले कै जात है॥ सो मेने अन्यपुरुष हाय  
कां ना हुं दिखावने॥ मो हूं को देखनो॥ १९॥  
श्रीक सत्तत्तं रुद्रकाननमागच्छामः परं



नं॥ नो जातु श्रुतिमपुनस्तुत्तावय  
यप्रदास्यामः॥ १२६॥ अथ अवव्रजनेन  
हृतं हं हमुतो निरंतरस्त्रीयं रावनविषं  
गतं हं॥ परचूदधुको दाननही॥ कथा  
कवहं सुन्या हं नाहं हं॥ तर्हि को कति  
संतम को देगे ने देगे॥ १२७॥ अथ  
पदद्यावधि चौरिह्या नटने मद्याहमंश  
तिस्तत्ता॥ दानं गृहीष्यामि सरोरुहादी  
रुणं पुरा विश्रमस्तत्त्वयैव॥ १२८॥ अथ  
श्रीठकुरजी कहत जो॥ अथ यदुमं वा  
वन जातो प्पोखन चोरी कारी॥ तिकतिकं  
दाने नटानो है प्रथम को घरा प्रयं नलकं  
॥ अथ मे पदिले मे चोरी कति गडं दो मे  
खटान मे लेदु गो॥ दि कुमल लीचन पद  
लेता एवि श्राम कतिकं पुन्यता व ये मुं  
रही पाय लागे गो॥ १२९॥ अथ गहा गावां  
दं प्रखर गुरु विद्वान्पयित नटगुं न  
हंत दुतर मिहा गलुत नच॥ अथ  
विद्वान्पयित नच॥ अथ

गने॥ इयदवध्वदस्वत्स्वरूपमित्यहं नम  
याज्ञातमुत्तमं॥ १६॥ अर्थ॥ जीवबालकयाप्र  
कारकहो॥ तव श्री ठाकुरजी आप कहत है  
जो हेवत्त भांगने॥ तुम तो श्री वृंदावन विर  
वेचिवे जात हो॥ और पास यमुना जल वि  
ष्टितुल्य स्थिति है॥ अथ वा तुम ऐसी के  
कहत है॥ हेवत्त भांगने॥ जो या करि के खे  
करि के कहत है॥ जो यह है॥ हाय हाय हा  
ऐसो उत्तम तुम्हारे स्वरूप अवलोकन मन ज  
न्यो॥ १७॥ अर्थ॥ श्री ठाकुरजी आप कहत है  
जो सुंदरी यह तो गोरक्ष को मिष मात्र की  
यो है॥ सो तो कायो॥ या को मोल्य कह करे  
कहं या वस्तु को मोल की मोल कायो है॥ त  
मउर स्थल विखें स्थापन करि के टाक के  
केले के जात हो॥ सो मेने अन्य पुरुष हाय  
को ना हुं दिखावने॥ मोहूं को देखने॥ १८॥  
अर्थ॥ स्वतंत्र वृंदाकानन मागछा भः परं

न॥ नो जातु श्रुतिमपि तत्कुं तो वयं  
अप्रदास्यामः ॥ १२६ ॥ अथ अवब्रजभक्त  
हृत्तहो हमुतो निरंतर श्रीचंद्रावन विषे  
गतहं ॥ परचंद्रधौ दाननही ॥ कथा  
कवहं सुन्याहं नाहं ॥ तामें को करि  
संतम को देगे न देगे ॥ १२६ ॥ श्लोक अथ  
पदद्यावधि चौर रिप्या न दत्त मद्याहमशे  
तिस्तत्ता ॥ दानं गृहीष्यामि यरो रूहादी  
रणं पुरा विश्रम तत्त्वयैव ॥ १२७ ॥ अथ  
श्रीठाकुरजी कहत जो ॥ अथे यह खं वो  
वन जातो सो खान चोरी कारी तिकरि के  
दान नदी नो है प्रथम सो धर प्रयंत तक  
सो अवमैं पहिले से चोर करि गई हो सो  
सब दान मैं लेऊ गो ॥ दिकु मल लोचनी पह  
ले दाए विश्राम करि के सुख ताव ये तुला  
रहो पाख लाऊ गो ॥ १२७ ॥ श्लोक गता गावो  
हं प्रखर खुरचि हान्पयिवने नदृश्यते  
हत्त दुत्तर मिहा गच्छत ततः ॥ इति श्री गो  
विंद प्रियवचन मा कर्ण समयं ॥ २॥

नां जापं यदुस तिमोर त ए विधौ ॥ १८ ॥  
एनेमें एक खखा वाल कनें आय कै रिकें श्री  
कुरजी सां क द्यो जो गाय तो इर गइ ह ॥ खु  
र के चिन्ह दुं वन विखें नां हो दे खिय त ह ॥  
हां तें इर गइ त ह ॥ १९ ॥ श्री गविंद जो श्री क  
अ चंद्र प्रिय वचन कर्ण सुनि कें तव गोप  
कों जाना ये गाय न कार सा की विधि गोप  
का आशा दत्त भये है ॥ २० ॥ श्री गविंद जो  
ल गोपेषु स्वेष्टा मा सी रति प्रियं अति प्रमु  
ता प्रोचुः प्रेमातिशय निर्भयाः ॥ २१ ॥ श्री  
ये जव गोप स वा तव श्री कुरजी गोपिक  
कों आपु में अत्यंत यहु दुष्ट वंछित जान कें  
व अत्यंत प्रसन्न हवें संयत होय कै कहे ॥  
र प्रेम में अति शय होय कै निर्भय हो करि  
कहते हैं ॥ २२ ॥ श्री गविंद परात्तम होवय में  
ल व्रज गोपनि तं विनि चोर जनाः विपि  
विजने प्रमदा रं धनं वर साधु जनः स्वय  
परं ॥ २३ ॥ श्री गविंद कहते हैं नय जो हे व्रज  
पनि तं वनी होय हवु जो आचर्य है जो लम  
त है जो विपरीत तुम्हारे स्वरूप निश्चय है

[illegible]

ना जा पय दु स ति गो र त ए वि धौ ॥ १८ ॥  
ए ने में एक ख खा वा ल क नें आ य कै रि कै ॥ श्री  
कुर जी सां क द्यौ जो ग य नो ड र ग ड हो ॥ खु  
र के चि न्ह हं व न वि खें नां हं दे खि य त हं ॥  
हं तें ड र ग ड त हं ॥ १९ ॥ श्री ग वि द जो श्री क  
अ चं द प्रि य व च न क र्ण सु नि कें त व गो प  
कों ज ना ये ग य न क र द्वा का वि धि ग प  
का आ ज्ञा द त भ ये है ॥ २० ॥ श्री ग ते म  
ल गो पे षु स्वे षा मा सी द ति प्रि यं ॥ अ ति प्र मु हि  
ता प्रो चुः प्रे मा ति श य नि भं याः ॥ २१ ॥ श्री ग  
ये ज व गो प स वा त व श्री क कुर जी गो पि कान  
कों आपु नें अ त्पं त य ह ड ए वां छि त ज्ञान के त  
व अ त्पं त प्र स न्न ह र्पं स प त्त ह य कै क हे ॥ आ  
र प्रे म में अ ति श य हो य कै नि भं य हो क रि कै  
क ह त है ॥ २२ ॥ श्री क वि प रा त्त म हो व य मे व कि  
ल व्र ज गो प नि तं वि नि चो र ज नाः ॥ वि पि ने  
वि ज ने प्र म दा रं ध नं व र सा धु ज नः स्व य मे व  
परं ॥ २३ ॥ श्री अ व क ह त है न य जो हे व्र ज गो  
प नि तं व नी हो य ह वु डो आ च र्य है जो लु म क ह  
त है जो वि प रा त्त तु म्भारो स्व रू प नि श्च है और

हृदि जगत्सु ॥ १ ॥  
खण्डेन च ॥ २ ॥  
अहो नमो ॥ ३ ॥  
॥ कश्चिदपि ॥ ४ ॥  
ध्यातुं ॥ ५ ॥  
अत्र वा ॥ ६ ॥  
वहतो ॥ ७ ॥  
कस्य ॥ ८ ॥  
माराधने ॥ ९ ॥  
श्री ॥ १० ॥  
॥ ११ ॥  
॥ १२ ॥  
॥ १३ ॥  
॥ १४ ॥  
॥ १५ ॥  
॥ १६ ॥  
॥ १७ ॥  
॥ १८ ॥  
॥ १९ ॥  
॥ २० ॥  
॥ २१ ॥  
॥ २२ ॥  
॥ २३ ॥  
॥ २४ ॥  
॥ २५ ॥  
॥ २६ ॥  
॥ २७ ॥  
॥ २८ ॥  
॥ २९ ॥  
॥ ३० ॥  
॥ ३१ ॥  
॥ ३२ ॥  
॥ ३३ ॥  
॥ ३४ ॥  
॥ ३५ ॥  
॥ ३६ ॥  
॥ ३७ ॥  
॥ ३८ ॥  
॥ ३९ ॥  
॥ ४० ॥  
॥ ४१ ॥  
॥ ४२ ॥  
॥ ४३ ॥  
॥ ४४ ॥  
॥ ४५ ॥  
॥ ४६ ॥  
॥ ४७ ॥  
॥ ४८ ॥  
॥ ४९ ॥  
॥ ५० ॥  
॥ ५१ ॥  
॥ ५२ ॥  
॥ ५३ ॥  
॥ ५४ ॥  
॥ ५५ ॥  
॥ ५६ ॥  
॥ ५७ ॥  
॥ ५८ ॥  
॥ ५९ ॥  
॥ ६० ॥  
॥ ६१ ॥  
॥ ६२ ॥  
॥ ६३ ॥  
॥ ६४ ॥  
॥ ६५ ॥  
॥ ६६ ॥  
॥ ६७ ॥  
॥ ६८ ॥  
॥ ६९ ॥  
॥ ७० ॥  
॥ ७१ ॥  
॥ ७२ ॥  
॥ ७३ ॥  
॥ ७४ ॥  
॥ ७५ ॥  
॥ ७६ ॥  
॥ ७७ ॥  
॥ ७८ ॥  
॥ ७९ ॥  
॥ ८० ॥  
॥ ८१ ॥  
॥ ८२ ॥  
॥ ८३ ॥  
॥ ८४ ॥  
॥ ८५ ॥  
॥ ८६ ॥  
॥ ८७ ॥  
॥ ८८ ॥  
॥ ८९ ॥  
॥ ९० ॥  
॥ ९१ ॥  
॥ ९२ ॥  
॥ ९३ ॥  
॥ ९४ ॥  
॥ ९५ ॥  
॥ ९६ ॥  
॥ ९७ ॥  
॥ ९८ ॥  
॥ ९९ ॥  
॥ १०० ॥

मुखे २३ अविजिज्ञान कर्तृगण  
 का कहत हैं जो या प्रकार कुलस्त्री विखें  
 कांतवन में पारीत करत हो या प्रकार से  
 आश्रय करि के गोपीमुख कमल विखें हाथ  
 करि के आधुकरजी गड स्थल विखें नर  
 यन करत है २३ अंगत्वादान

लए सौरभ न तां वृल रेखित कपोल यु  
 न चाद्ये सौंदर्य सीमन खरं कित वदत  
 च युक्ता निजंगह मुदर कथं गमिष्ये  
 श्रीरुकरजी प्रति श्रीविजय कर्तृ कहत  
 है जो तुझारे मुख कमल तें बिल दए अ  
 दुत असाधार परिमल करि के मेरो अंग  
 मुख बिल दए सौरभ सुगंध सो भयो है अ  
 र तुझारे तां वृल के पाक के रेखा तें दोनो  
 गाल अद्यते और सौंदर्य की हट नखक को  
 अ कित वद स्थल तां दे भयो है और उदर  
 हाय के अपने घर को जाऊंगी कहत भई  
 कथं हारः दुःखः कथं मुवलया

२४ नाविरलना विलंबः केना सादृधिक लक्षि  
 का कुत्र किमभूत् प्रियेत्थं पृष्ठाहं निजय



जना मे सरभ संकि मारणा से स्त्री एणं प  
रे जन वशी जीवन विधिः २५  
जव हमारे भरतार हम को पूछे जो तुहा  
मातीन के हार टुटे कहा और तुहारी चु  
के लर न्यारी न्यारी टीली कौ को ह भयो है  
पर नित्य तो सवारे आवते आ जगु ले नि  
व कह भयो कहार है हने तुहारी दधि  
लश कह होत भई है हमारे प्रिय जो न  
रिया प्रकार पूछे जो हम को तव हम आ  
मे मुरजन सासु ससुर देवर जे ट देखत  
वहां चकि तरहे गे हम कहा कह गे जी  
वन की विधि २५ सत्य स्त्री एणं जीवन  
मन्याय ज्ञं परं न गोपी काना मरधीन मे  
व किं तु प्रिय सखित हो कुतो नातिः २६  
अव श्री गुरुजी आप कहत है जो  
स्त्रीन के जीवन पराय अधीन है दै गोपि  
कान सब तुहारे नही तुम को है को डर  
पतत है हे प्रिय सखी कंतु तुम मर आ  
धीन हो २६ गोकुल मखिनंता  
वन्क मन न्य गरां विशेष तो गोणुः कि  
नुत्यां मिह किंचित्कश्चिद्रया

मुखे २३ अवविज भक्ति गोप  
का कहत है जो या प्रकार कुलस्त्री विखें  
कांत वन में पारीत करत है या प्रकार से  
आश्रय करि कै गोपी मुख कमल विखें हाथ  
करि कै आराध कर जी गड स्थल विखें नर  
दान करत है २३ अंगत्वादान

लए सौरभेन तो वृल रे खिन कपोल यु  
न चाये सौंदर्य सी मन खरा कित वत  
च युक्ता निजंगह मुदर कथं गमिष्ये  
श्री राकुरजी प्र ति श्री विज भक्त कहत  
है जो तुम्हारे मुख कमल तें विलक्षण अ  
दुत असाधारण परिमल करि कै मेरो अंग  
मुख विलक्षण सौरभ सुगंध सो भयो है आ  
र तुम्हारे तां वल के पीक के रेखा तें दोनो  
गाल अद्यते और सौंदर्य की हट नखक के  
अ कित वत स्थल तां भयो है और उदर  
होय कै अपने घर को जाऊंगी कहत भई

२४ कथं हारः दुःखः कथं मुवलया  
ना विरलना विलंबः केना सीदुधिकलशि  
का कुत्र किमभूत् प्रियेत्थं पृष्ठाहं निजगु

जिनामे सरभ संकिभास्यासेस्त्रीएणंप  
रेजनवशीजीवनविधिः २५  
जवहमारभरनारहमकोपूछेजो तुहा  
मोतीनकेहारदुटेकहा औरतुहारीचु  
केलरन्यारीन्यारीटीलीक्योकोहभयोह  
रनित्यतोसवारैआवते आउसुहोनि  
वकहभयो कहारहेहस तुहारीदधि  
लशकहाहोतभईह हमारेप्रियजोन  
रियाप्रकारपूछेजोहमको तवदमआ  
नेमुरजन सासुससुरदेवरजेददेसुत  
वहीचकितरहेगेहमकहाकहेगे जो  
वनकोविधि २५ स्वल्पंस्त्रीणंजीवन  
मन्यायज्ञंपरंनगोपीकान्तां मरध्यातमे  
विकितुप्रियरेखितज्ञकुलोनीतिः २६  
अवश्रीणकरजीआपकहनेहं जो  
तीनकेजीवनपरायआध्यानहहेगोपि  
कानसबलुह्यागेनई तुमकहेकोड  
पतनेहोहेप्रियमस्वीकृतुतुममरेका  
धानहो २६ मोकुलमखिलनेको  
वल्कमनन्यशरणंविशेषतोमोमः  
कुस्वानिदकिंचिन्कश्चिदुपा

॥२७॥ या को अवशी विजांगना गोपीसख  
हृत है जो गोकुल पूर्ण तुमारे है और गे  
संपूर्ण निश्चै करि कै तुमारे अनन्य शर  
है किंतु तुम हंम से थोरै मति कोऊ कह  
यही हम के भय है ॥२७॥ श्लोक अवशी कर्त प्र  
हय वा एगो विंद मान सम ॥ नास को लु  
रायांतु प्रेम पूरा अशयतः ॥२८॥ या को यह  
दरीन की वा एगो है सो श्री गे विंद के मन व  
बस करि वे को प्रविष्ट नई है सहावानी  
देते निकलने नय को पर नरवार दूट मध्य  
प्रेम ते पूरा होय के जरा भयो निकल न सको  
व्याज किंतु न ब्रूषे ना वं प्रकटी करे वि किन्ते  
वा ॥ नान्यः श्रुणोति कश्चिन्किं नयमवलंब  
सेनाथ ॥२९॥ या को श्री गुरु जी कहत है  
जो हे प्रिये गोपिकान तु मछल करि कै कौं  
कहत हो अपानो भाव प्रकट कौं ना ही क  
हत हो अन्य को ही ना ही सुने गे को हे नय  
को अवलंबन करत हो नथ ॥२९॥ श्लोक  
शं विदधि भाजनं शिरसिते मना गदगद म  
पहं वतन पारै ये विपुल आरमा भाति मे  
चंदन विनिधे हित तत्त्व एम पा कह थां

पुण्यं भक्त्यमाहृतो वहति सोऽपि या  
र्थतां ॥ ३॥ या कोऽर्थवशीलकुरजी आप  
त है जो हे कृशांगी दधी को पात्र तुझ  
माथे पर है जो पारनाही पावत ने के दे  
वि को द्रुसामर्थ्य नाही है और वहुत  
रमथे पर धर के फिरता हो याते माथे  
भार उतार के दार मात्र सुखताव ऐसी  
गंध पवन वहत है सो तुझारे अर्थ ही ॥ ३॥  
कुसुम सुकुमारंग श्री मत्पुदारतरे  
नाकै रसिवर वा सो प्ये तद्वयं नखहामहे  
ए मिहतदस्माकं हस्ते कुरु व्रजवल्लवी  
यनरुषयो नीरं नाथ त्वमस्य तिसुंदरः ॥ ४॥  
या कोऽर्थवशीलकुरजी कहत है जो  
कुसुम सुकुमारंगे फूल जै सो सुकुमार  
ग है तुझारे कांति मान ऊदार वहुत बखो  
तमने तुझारे ऊर स्थल विरेव जो अखंड  
जो पाता बरहं यह है एक और दूसरा विजा  
ना सदर रूप जो नयन मछ के तुम नीर  
के अर्ध रूप तुम हो और हे नाथ तुम मस  
तिसुंदर है और तुझारे नमारे ए मात्र

२७॥ या को अथ श्री विजांगना गोपीसख  
रत है जो गो कुल पूर्ण तुमारे है शोर गो  
संपूर्ण निश्चै करि कै तुझारे अनन्य शर  
है किंतु तुझे हम से थोरो मति को रुक है  
यही हम कां भय है ॥ २७ ॥ श्री गोविशी कर्तु प्र  
हय वा एगो विंद मान सम ॥ ना स नो तु  
रायां तुं प्रेम पूरा ज रायतः ॥ २८ ॥ या को यह  
दरीन की वा एगो है सो श्री गोविंद के मन व  
बस करि वे को प्रविष्ट नई है सहावानी  
दे ते नि कलने नय को प्रानर वार दूट मध्य  
प्रेम ते पूर्ण होय के जरा नयो नि कलन स मौ भो  
व्याज किंतु न ब्रूषे ना वं प्रकटी करो वि किन्ते  
वा ॥ नान्यः श्रु एति कश्चि किं नय मवलं व  
से नाथ ॥ २९ ॥ या को श्री रा कुर जी कहत है  
जो हे प्रिये गोपिका न तु मछल करि कै कौ  
कहत हो अपानो भाव प्रकट कौ ना ही क  
रत हो अन्य को ही ना ही सुने गो काहे नय  
कां अवलं वन करत हो नथ ॥ ३० ॥ श्री क  
शांति दधि भाजनं शिरसि ते म ना ग दृष्ट म  
पहं वत न पारे ये विपुल नार मा भाति मे  
तद्वच विनिधे हित तत्त्व ए म पा कुं ठ थां

प्ययं मलयसारुतो वहतिसोपिया  
र्थतां ॥३॥ या को अथ श्री गुरुजी आप  
त हैं जो हे कृष्ण गीदधी को पात्र तुझ  
मथे पर है जो पारनाही पावत ने कदे  
वि को द्रुं सामर्थ्य मांही है और वहुत  
रमथे पर धर कै फिरता हो याते मथे  
आरु उत्तर कै दाए मात्र मुखता व  
गंध पवन वहते है सो तुझारे अर्थ हो  
हे कुसुम सुकुमार गंग श्री मत्तु दा  
ना कै रसिव रवा सो प्ये तदयं न सह  
ह ए मिह तदस्माकं हस्ते कुहं द्रुं ह  
नयन रुषयो नीरं नाथ त्वमस्य लेक  
॥३॥ या को अथ विजय न कि क

शुद्धममदीयमावृजेशत्वदीयोत्तरी  
नकल्पेनदेवंकथंत्वन्तियोगात्॥३२॥  
श्रीगुरुजीआपकहतहैं॥  
हेसरोजातीतुमधुधकोभाजनउत्तरी  
औरवेगहमाशदानदेहु॥तवविजभ  
नउत्तरदेतहैं॥एतत्याप्रकारकोकहे  
किसकोदेवेकौनतुमारीउत्तरीयह  
कायोगात्कहतहैं॥३२श्लोक॥धृत्वा  
शिरस्थंकलशकरेएस्थितेप्रियेक  
पुरोवदामि॥भयंभवत्येतदितिवृवा  
एान्यद्यातयद्वाजनमेवमुच्यते॥३३॥  
कोअतदनंतरश्रीगुरुजीआपनेब्रज  
भक्तनकेमाथेउपरउपरनेपरकलश  
कास्थितिहैं॥याश्रीगुरुजीनेआपने  
धृजभक्तनकेमाथेउपरधरि॥जोयह  
कलशफुटतहै॥हमकोनकेआगेकहे  
याप्रकारकहतएथीउपरएकभाजन  
कोगिरावतभयेहोएथीउपरकहे  
॥३३॥श्लोक॥तदाचंद्राकल्पानिजभुजपट्टे  
प्रियतमंनिगृह्यैवप्रोक्तंविजयचिरनो  
यकुंकथया॥नगंधुशक्तोयंत्वदभिमुख



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥  
कृती मित्युद्ध नत्तर निहं म्पे कागव  
नमधिकतानाधररसो ॥ ३६ ॥ याकेतव  
चंद्रावलीज आपुनेदोउ श्रीहस्तकरिके  
पुनेप्राप्तमप्राप्तयकोपकरिके लुजस  
दकरिके कहत भई है कुंजते लुसव ग  
जमें जायवै कौं श्रीगकुरजी कहात रन  
रसलीकु कहौं जो तुमारे श्रीमुखके आ  
तिजावै कौं शक्त नाह है जायनस कौं गी  
नहेतें जो अधरस की पाव करिवे की अधी  
नरन दुत्तीतरह जे अधिकारन या रसक  
नहुत ते गई ॥ ३७ ॥ ॥ लोकमया धत्तेयं कम  
लात्किंवा तया धत्तो हव दत्त्वमेव ॥ समुद्र  
येनागरको विरोधो विना न वत्ते तदुक्त  
नीचो ॥ ३८ ॥ याको श्री गकुरजी कहत है  
जो हे कमल नैयनी हम तुम कौं धारन की  
येहौं किंवा तुम हम कौं धारन कायेहौं ग  
वैहौं नागर कहो विरोध है विना तुमारे  
पीतांबर ऊर कौं नीची ग्रंथि ॥ ३९ ॥ ॥ त  
मेव न व्र मध्यस्था वाटिनो गधयो यस्मी  
उवयोर्विनिनाम त्रामरं ना किंवा मे

ति: ३६ अथ श्रीगुरुजीयास  
को कहत है जो तुम हो हमें दोड़ बादी है  
के बीच मध्य स्थ हो गवयो कहे जो हमारे  
रेकहे हम दोड़ बादी है जो तुम दोड़ बीच  
नीकहे सो कमल नि के नाल में कोए कत  
तंतु इतने वाच अंतराय ना हो है ३६  
विना भवति सखीयं त्वदं गस गा मि  
षया सुभगः त्वं स्मरु म नो नुरं जनं म  
वैर्ये पशु काया ३७ सखी श्रीग  
जी प्रति कहत है जो हे सखी विन न हे  
त होये सखी सुभग सुंदर तो भाग्य मान तुम  
रे अंग के संग की अभिलाषा विखे हे  
भगता सो तुम या को मन रि कायो रजन  
करो या को अवधे र्य कहि वे को यह अश  
कहे ३७ त्वत्संग गमन स्पष्टि य  
सखि पल्लव मेतदा विरासीतः अन्या मपि  
निज सदृश कर्तुं बांछ स्पष्टि किंतु ३८  
अव श्रीचंद्रावली जय ह्य सखी प्रति  
ह न हे ह प्रिय सखी ते रे संग आइ वे को  
मे यह प्रगट नयो है यह फल पायो जो  
कहे आपु जे सखी कहि वे को कहा तुम वां  
त हो श्री को आपु ने जे सी की बोचा है

३६ तदा मुदानीज्ज...  
संहरं नवप्रणयपराद्धह...  
३६ अवशान्कुरज्ज...  
पुनो स्पर्शकरिवेको विरहे...  
पदासौहै

मामानद मास्पृशोतिवचसाह...  
प्रियं साकृन् करपलवैपि चिह्न...  
लेपस्पृशान् नास्का लो...  
एवशाद्वाधा प्रिये प्रेयसः...  
नथा विधेन वचनेना संस्तर...  
३६ ३६



